वर्ष 36 अंक : 5 24.10.2013 गुरुवार (सितंबर-अक्तूबर) शुल्क – प्रति अंक : ₹ 10.00 वार्षिक : ₹ 50.00

भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

Centenary Celebrations
HIS DIVINITY KAKAJI MAHARAJ · HIS DIVINITY PAPPAJI MAHARAJ
100
Paris
12-13-14 August 2013

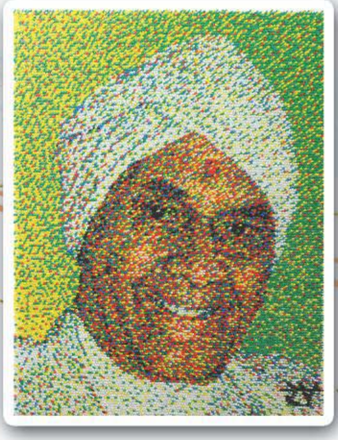

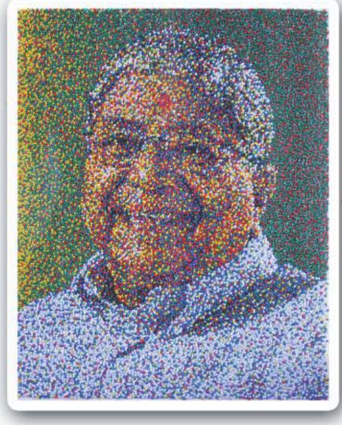

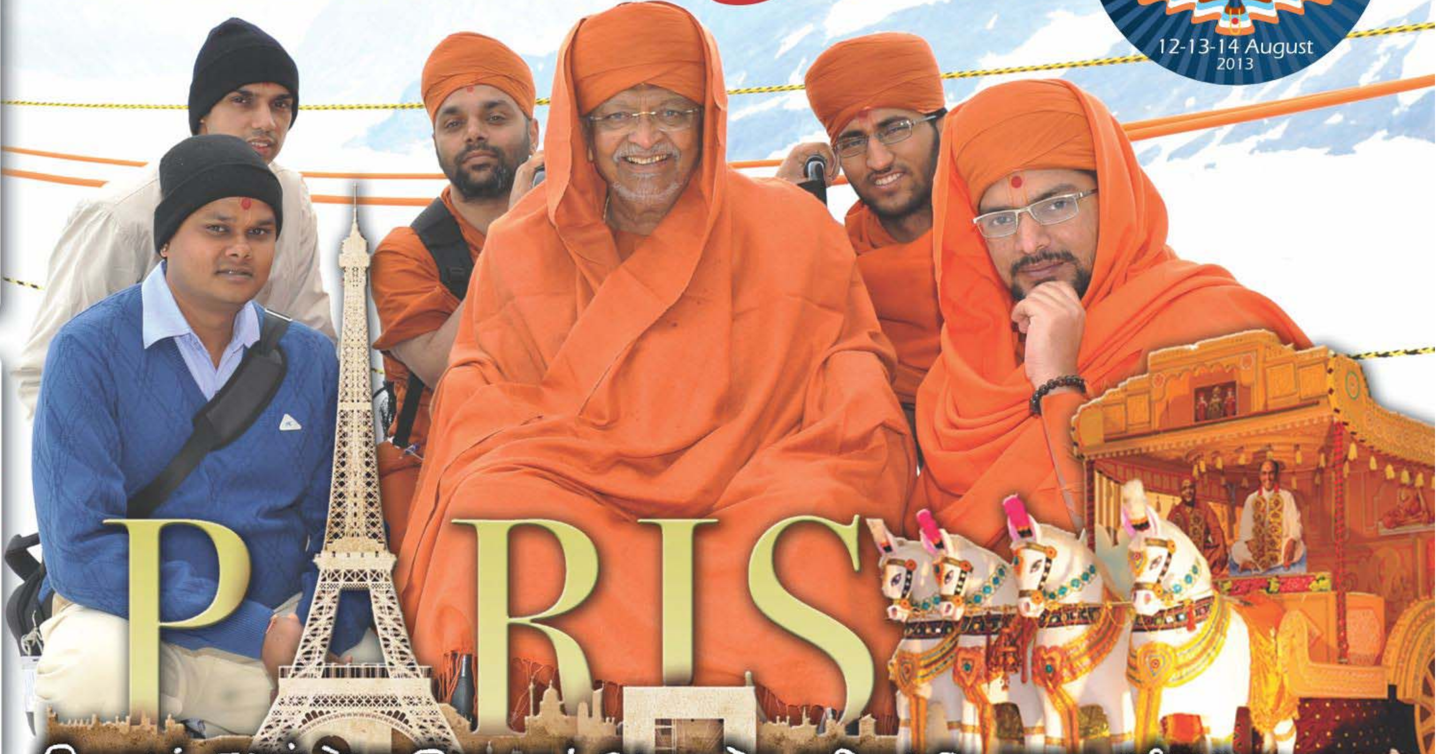

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

लंदन में ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी की प्रासादिक भूमि पर

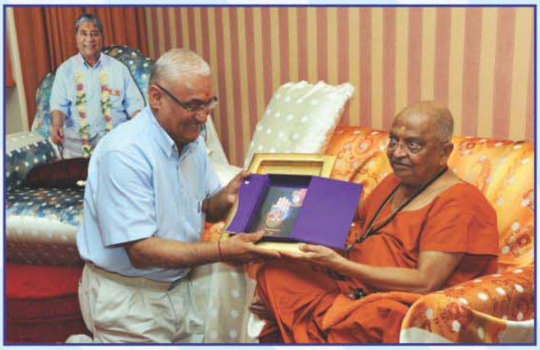

'सुप्रीमसी ऑफ लॉर्ड स्वामिनारायण' का पू. हिंमतस्वामी के वरद् हस्तों उद्घाटन

अनुपम मिशन–निर्माणाधीन मंदिर की जगह पर धुन

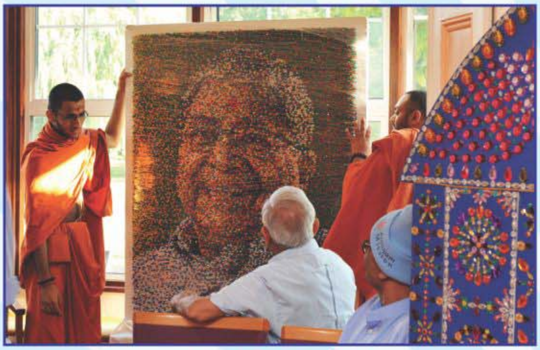

अनुपम मिशन–लंदन

गुणातीत ज्योत–लंदन

ट्रफालगर स्क्वेयर पर

लॅस्टर में पू. विमु मासी के घर पर

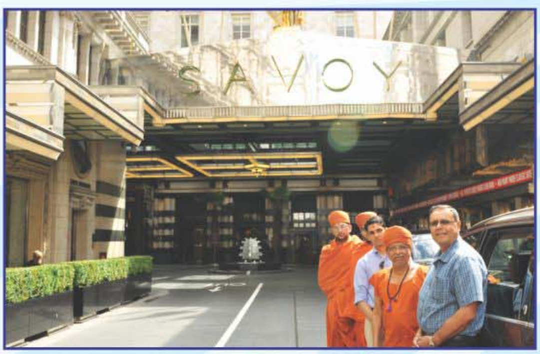

ब्रह्मस्वरूप काकाजी की प्रासादिक हॉटल के गेट पर

ब्रह्मस्वरूप काकाजी की प्रासादिक कॉलेज के गेट पर

प.पू. गुरुजी की प्रथम युरोप यात्रा
एवं
पेरिस में मनाए गए 'बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव' के प्रथम चरण
की
दिव्य स्मृतियों के संग आगामी पर्वों का स्वागत करें...

पिछले वर्ष पुरुषोत्तम मास के निमित्त मुंबई-पवई में **'गुणातीतस्वरूप दर्शन'** सत्संग सप्ताह का आयोजन हुआ था। प.पू. गुरुजी भी सरप्राईज़ में वहाँ दो-तीन दिन के लिए गए थे। तब पेरिस के **प.भ. प्रवीणभाई लाड** ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा था –

हमारे गुणातीत समाज के सभी केन्द्र काकाजी-पप्पाजी की शताब्दी संयुक्त रूप से एक होकर मनाएँ और

गुणातीत समाज के 'हम सब एक' की उनकी अंतर की भावना को व्यापक बनाएँ।

प.भ. प्रवीणभाई की ऐसी भावना को प.पू. गुरुजी ने **'अंतःकरण से परे का विचार'** बता कर, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई एवं प.पू. वशीभाई की सहमति से दिनाँक 22 अक्तु. 2012 को गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों में एक परिपत्र भिजवाया और... आज का गुणातीत समाज जिन दो बंधुओं के लहू से सींचा गया है, उनके प्रति भक्ति अदा करने सभी ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए इस प्रस्ताव का तहेदिल से स्वागत किया।

और... **प.भ. प्रवीणभाई लाड, लंदन के प.भ. किशोरभाई मास्टर्स एवं पेरिस-लंदन मंडल के मुक्तों** ने तो **12, 13, एवं 14 अगस्त 2013 को पेरिस में 'बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव' के प्रथम चरण का बिगुल भी बजा दिया!** ब्रह्मस्वरूप काकाजी-ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी के प्रति पेरिस-लंदन मंडल की ओर से ऋण अदा करते हुए **प.भ. घनश्यामभाई अमीन** ने भी उत्सव की शुरुआत से अंत तक दिन-रात एक कर दिया।

हम जानते हैं कि प.पू. गुरुजी कभी भी भारत से बाहर जाने के लिए इच्छुक नहीं रहे। इससे भी अधिक यदि किसी मुक्त ने भी भारत से बाहर जाकर बसने के बारे में पूछा तो उन्होंने हमेशा अनिच्छा ही जताई।

वे खूब मानते हैं कि –

अवतार लेकर 'यावच्चन्द्रदिवाकरौ' बस जाने के लिए जिस भूमि को यानि – भारत को भगवान स्वामिनारायण ने पसंद किया, इससे बढ़ कर दुनिया में कोई जगह नहीं है।

अरे! पैसे कमाने हेतु भी अमेरिका जाने के लिए कोई उन्हें पूछे तो वे कहते हैं –

हम बोलते हैं न कि 'पैसे तो भगवान देते हैं, तो सच में वह मानते क्यों नहीं? उन्हें हमें पैसे देने होंगे, तो यहाँ भी दे देंगे।'

और तो और, प.पू. गुरुजी ने अंतेवासी सेवक के पास 'एक डॉलर' का नोट रखवाया हुआ है; उसे दिखला कर उस पर लिखा हुआ पढ़वाते हैं –

'वी ट्रस्ट इन गॉड.'

अर्थात्, अमेरीकन्स भरोसा करते हैं प्रभु का! और... वे प्रभु बसे हैं भारत में !! फिर भी, पैसों की लालसा में हम दौड़ते हैं वहाँ !!! इसे अक्लमंदी कही जाए या मूर्खता ?

इससे भी अधिक – हमें पैसा कमाना है हमारे बच्चों के लिए न ? लेकिन वहाँ का यानि – पश्चिम का कल्चर ही ऐसा है कि वहाँ के माहौल में हमारे बच्चे हमारे रहेंगे ही नहीं ! हाँ, जिन्हें सत्संग का खरा जोग हो, उनकी बात अलग है।

सो, पेरिस उत्सव में जाने की बात पर प.पू. गुरुजी मुक्तों को यही कहते कि 99 प्रतिशत तो मैं नहीं जाने वाला, लेकिन आपको मेरी ओर से जरूर जाना है। पर, 17 मई को जब प.पू. वशीभाई के साथ **प.भ. प्रवीणभाई लाड** पेरिस से सीधा दिल्ली मंदिर आए और उन्होंने प.पू. गुरुजी के प्रति अपनी भावना व्यक्त की, तब **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की आज्ञा लेकर** प.पू. गुरुजी ने पेरिस जाने का मन पक्का बना लिया और पेरिस के साथ-साथ प.पू. गुरुजी ने 'लंदन' – जहाँ ब्रह्मस्वरूप काकाजी और ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी ने कुटुंबभाव से सत्संग के बीज बोए हैं, वहाँ भी जाने की इच्छा ज़ाहिर की।

प.पू. वशीभाई के परामर्शानुसार 'कॉक्स एण्ड किंग्ज़' के ज़रिए वीज़ा इत्यादि की कार्यवाही शुरू हुई। **प.भ. राकेशभाई** ने करीब दो महीने ऑफिस का काम, मंदिर के एकाउटन्स और अंग्रेजी पुस्तक 'सुप्रीमसी ऑफ लॉर्ड स्वामिनारायण' का अनुवाद करने की सेवा के साथ-साथ, जाने वाले सभी मुक्तों को वीज़ा आसानी से मिल जाए, इस हेतु जरूरी डॉक्युमेन्ट्स चॅक करने, कवरिंग लेटर्स तैयार करने और उन्हें गाईड करने की सेवा की। **पू. डॉ. यमुना** ने तो तबियत नादुरस्त होते हुए, प.भ. राकेशभाई को सहाय रूप होने के लिए सभी के पासपोर्ट्स, फोटोग्राफ्स वगैरह इकट्ठे करने रात-दिन सेवा की। लंदन के लिए रवाना होने से एक दिन पहले, पू. डॉ. यमुना के साथ **पू. पारुल सूद** एवं **पू. डिम्पल** देर तक जाग कर, सभी के पासपोर्ट्स, एयर टिकिट्स एवं जरूरी पेपर्स के फोल्डर्स बनाने में लगे रहे। इसी प्रकार, **प.भ. आशिष, प.भ. पुनीत मल्होत्रा, प.भ. राजुभाई शाह, प.भ. मिलनभाई, प.भ. चेतन** एवं साथियों ने जाने वाले मुक्तों के सामान पर नाम व पते का टॅग, पहचान के लिए तिरंगा रिबन लगा कर मंदिर से ही सामान का वेईट करके दिया, ताकि ख्याल पड़ जाए कि कहीं वज़न ज़्यादा तो नहीं और हर जगह सामान अलग पहचाना जाए। **प.भ. पुनीतजी** एवं **प.भ. दीपक अग्रवाल** ने सभी को फॉरन करन्सी एरेन्ज कराने की सेवा उठा ली। ऐसे मुक्तों की सेवा को दिल से नमन।

और... **6 अगस्त 2013** को दिल्ली मंदिर से जुड़े हरियाणा, पंजाब, यू.पी. एवं दिल्ली के हरिभक्त सायं 4:15 बजे मंदिर में एकत्रित हो गए। प.पू. गुरुजी की निश्रा में सभी ने 4:30 से 5:00 धुन की। पू. सुहृद्स्वामी, प.भ. पुरी साहेब एवं संतों ने मिल कर प.पू. गुरुजी का पूजन किया और श्रीफल - कार्ड अर्पण करके, रक्षा कलावा बांध कर, दही-जीरा खिला कर 'बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव' निमित्त युरोप जाने के लिए विदाई दी। प.पू. गुरुजी ने सभी को आशीर्वाद दिया। मंदिर के कुछ संत, युवक, बहनें एवं गृहस्थों को मिला कर प.पू. गुरुजी के साथ करीब 40 मुक्त जाने वाले थे। सो, उन सभी का भी पूजन करके, दही-जीरा खिला कर और मिश्री का प्रसाद देकर मंदिर से विदा किया।

प.पू. गुरुजी के अतिरिक्त सभी मुक्त तो करीब सात बजे दिल्ली के इंदिरा गांधी इन्टरनेशनल एयरपोर्ट के लिए रवाना हुए। प.पू. गुरुजी आठ बजे एयरपोर्ट के लिए रवाना हुए। खूब तेज़ बरसात हो रही थी। पर,

सभी के दिलों की धड़कन प.पू. गुरुजी, पंद्रह दिन के लिए दिल्ली से नहीं, बल्कि भारत से बाहर जा रहे थे, सो करीब डेढ़ सौ निजी मुक्त प.पू. गुरुजी को छोड़ने के लिए एयरपोर्ट पहुँचे थे। आधा-पौना घंटा बाहर ही बैठ कर प.पू. गुरुजी ने सभी को दर्शन दिए और चॉकलेट का प्रसाद बाँटा। वहाँ से गुज़रते कई मुमुक्षु भी दर्शन करने आए और चॉकलेट का प्रसाद लेकर गए। सभी को मूर्ति का सुख देते हुए, भावुक हृदय से प.पू. गुरुजी करीब दस बजे एयरपोर्ट के अंदर गए। एयरपोर्ट की सारी औपचारिकता निपटाने के बाद प.पू. गुरुजी एग्ज़ीक्यूटीव लॉन्ज में गए, लेकिन थोड़ी ही देर के बाद बाहर आकर – *'मेरे अपने तो यहाँ बैठे हैं...'* कहते हुए मुक्तों के साथ बैठ गए। प्लेन में जाने से पहले प.पू. गुरुजी ने प.भ. बच्छराजजी एवं मुक्तों से कहा –

जाने से पहले भारत की पवित्र भूमि की मिट्टी को माथे से लगा कर प्लेन पर चढ़ना।

7 अगस्त 2013 सुबह (मध्यरात्रि) सवा बजे प.पू. गुरुजी एवं साथ के 40 मुक्त **स्विस इन्टरनेशनल एयरलाईन्स** LX 147 से ज्युरिक के लिए रवाना हुए। वहाँ के लोकल समय सुबह 6:20 बजे ज्युरिक एयरपोर्ट उतर कर LX 316 से लंदन के लिए रवाना हुए। वहाँ के लोकल समय 7:55 बजे लंदन हिथ्रो एयरपोर्ट पर पहुँच कर सभी इमीग्रेशन की औपचारिकता निपटाने लगे कि इसी संदर्भ में प.पू. गुरुजी ने सभी को विदेश की सर्वप्रथम अनोखी स्मृति दी। यू.के. बॉर्डर एजन्सी की चॅकपोस्ट – जहाँ पर सभी डॉक्यूमेन्ट्स इत्यादि चॅक किए जाते हैं, वहाँ प.पू. गुरुजी से फिंगर प्रिन्ट्स देने के लिए कहा गया। प.पू. गुरुजी ने पहले दायाँ अंगूठा लगाया तो उसका प्रिन्ट नहीं आया, फिर इन्डेक्स फिंगर लगाई, उसका भी नहीं आया। साथ गए प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी ने बताया कि बायपास सर्जरी के कारण प.पू. गुरुजी का दायाँ भाग कमज़ोर है। सो, प.पू. गुरुजी से बाएँ हाथ के फिंगर प्रिन्ट्स देने के लिए कहा गया। लेकिन, उसके फिंगर प्रिन्ट्स भी नहीं आए। प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी ने अपने हाथ से दबाने की कोशिश की, तब भी नहीं आए। सो, काउन्टर पर बैठी इन्चार्ज ने प.पू. गुरुजी को साईड में बैठने के लिए कह दिया। प.पू. गुरुजी तो भीतर ही भीतर खुश हो गए कि *चलो, आज वापिस अपने देश लौट जाएँगे।* पर, प.पू. गुरुजी के पास बादाम पूरी का प्रसाद था, जो प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी ने उस इन्चार्ज को दिया; भक्तों की प्रार्थना कहो या प्रसाद का करिश्मा कहो – अंदर अपने अफ़सर से बात करके वो आई और आते ही इमीग्रेशन स्टेम्प लगा कर क्लीयर कर दिया! दिल्ली से सभी के सामान पर टॅग और तिरंगा रिबन लगा हुआ था, सो एयरपोर्ट पर ड्यूटी दे रहे एक सरदारजी ने एक जैसे रंग के रिबन देख कर पूरे ग्रुप का सामान पहले से ही अपने आप अलग करके रख दिया था, जिससे सभी को आसानी से सामान जल्दी ही मिल गया।

एयरपोर्ट पर **पू. हिंमतस्वामिजी**, **प.भ. किशोरभाई मास्टर्स**, लंदन गुणातीत ज्योत से **पू. शोभना बहन** इत्यादि प.पू. गुरुजी व मंडल को रीसीव करने के लिए आए थे। एयरपोर्ट से प.पू. गुरुजी एवं सभी मुक्त **अनुपम मिशन** पहुँचे। प.पू. गुरुजी, संत, सेवक, बहनें एवं कुछ मुक्त अनुपम मिशन में ठहरे। अन्यों की व्यवस्था भी पू. हिंमतस्वामी ने नज़दीक में ही की थी। नित्यविधि करके सभी तैयार हो गए। प.पू. गुरुजी ने दिल्ली से जुड़े प.भ. रवि आर्टिस्ट द्वारा तैयार की गई **प.पू. साहेबजी** की पुश पिन आर्ट की मूर्ति पू. हिंमतस्वामी को भेंट दी।

अनुपम मिशन - लंदन के प्रॅसीडेन्ट **प.भ. वीनूभाई नकारजा** ने प.पू. गुरुजी को अनुपम मिशन

की ज़मीन का सारा इतिहास बताया कि यह ज़मीन को लेने के बारे में हम असमंजस में थे। पर, तब **प.पू. काकाजी ने** उन्हें **कहा–**

मैं ही पप्पाजी हूँ, मैं ही बा हूँ और मैं ही साहेब हूँ और तुम्हें कह रहा हूँ कि यह ज़मीन ले लो।

आर्षदृष्टा विभूति प.पू. काकाजी की बात वरदान सिद्ध हुई और आज अनुपम मिशन का इतना बड़ा और जीवंत एवं सुंदर परिसर है, जहाँ सभी को पॉज़िटिव वाईब्रेशन्स महसूस होते हैं।

उस समय जब काकाजी लंदन जाते तो उन्हें बस में सफर करना पड़ता था, जबकि आज वहाँ के एक-एक भक्तों के घर में चार-चार गाड़ियाँ हैं। तब प.पू. गुरुजी ने दिल्ली के भक्तों को याद किया कि प.पू. काकाजी के समय दिल्ली में भी ऐसे ही हालात थे, लेकिन आज सभी के घरों में गाड़ियाँ हैं। ये सभी बातें सहज ही हृदय को भावविभोर कर देती हैं कि जिनकी बदौलत आज हम सभी सुखी हैं, उन्होंने हमें सुखी करने के लिए कितना कुछ सहा।

उसी दोपहर को प.पू. गुरुजी के विश्राम में जाने के बाद, प.भ. किशोरभाई आग्रहपूर्वक अन्यों को **'विन्डसर कॅसल'** दिखाने के लिए ले गए। शाम को अनुपम मिशन में भजन संध्या हुई। पू. हिंमतस्वामी एवं भाइयों ने भजन प्रस्तुत किए और उनके द्वारा गाए भजन – *जोई मूर्ति मनोहर तारी...* सुन कर प.पू. गुरुजी के साथ-साथ सभी लीन हो गए। जैसे कि प.पू. गुरुजी बताते हैं कि ब्रह्मस्वरूप काकाजी की रीति थी कि कोई भी पब्लिकेशन होता, तो वे उसे अलग-अलग जगह पर रीलीज़ करवाते थे। यूँ, प.पू. गुरुजी ने दिल्ली में 3 अगस्त को **प.भ. मल्कानी अंकल** द्वारा अंग्रेजी पुस्तक **'सुप्रीमसी ऑफ लॉर्ड स्वामिनारायण'** का उद्‌घाटन करवाया और अब **पू. हिंमतस्वामी** के वरद् हस्त यहाँ उसका उद्‌घाटन करवाया।

अगले दिन **8 अगस्त** की सुबह सभी तैयार होकर ब्रह्मस्वरूप काकाजी के प्रसादी के स्थलों के दर्शन करने के लिए गए। प.पू. गुरुजी के लिए अनुपम मिशन के भाइयों ने फॉर्ड गॅलेक्सी गाड़ी सेवा में रखी थी। पू. जयंतभाई – जिन्होंने तीस साल पहले चालक बन कर ब्रह्मस्वरूप काकाजी की सेवा की थी, उन्हीं को प.पू. गुरुजी की गाड़ी चलाने का मौका मिला। रास्ते में उन्होंने प.पू. गुरुजी को ब्रह्मस्वरूप काकाजी का प्रसंग बताया–

एक बार काकाजी जब पेरिस जाने वाले थे, तो अचानक हिथ्रो आए। मैं उन्हें लेने के लिए गया, तब मिशन के कई भाई यूरोप गए हुए थे और मेरे कॉनटॅक्ट लेन्स खराब हुए थे। मुझे धुंधला दिखाई दे रहा था, तो काकाजी बोले कि राजा, तू गाड़ी चला मैं तुझे रास्ता बताऊँगा और... काकाजी ने लंदन शहर का पूरा रास्ता उन्हें बताया; इस तरह वे लंदन में घूमे।

पू. जयंतभाई से बातें करते-करते **'नॅचरल हिस्ट्री म्यूज़ियम'**, ब्रह्मस्वरूप काकाजी की प्रसादी का **'हॅरोड स्टोर'** देखते हुए प.पू. गुरुजी **'ट्रफाल्गर स्क्वेयर'** पहुँचे। प.पू. गुरुजी के साथ गए अन्य सभी हरिभक्त भी वहाँ पहुँच गए थे। वहाँ **प.पू. गुरुजी ने बताया कि सपने में 'ट्रफाल्गर स्क्वेयर' उन्हें जैसा दिखाई दिया था, वाकई वैसा ही यह है।** अन्य कई जगह देखते हुए जब लंदन की लाईफ लाईन **'थेम्स नदी'** के ऊपर से प.पू. गुरुजी निकले, तब प.पू. गुरुजी ने गुरुहरि योगीजी महाराज की स्मृति कराई कि बापा को एक बार भक्तों ने बताया कि आपको लंदन शहर में यहाँ-यहाँ जाना है, तब बापा ने कहा – *थेम्स भी जाना है।*

भक्तों ने कहा कि वहाँ आप उतर नहीं पाएँगे, वहाँ मिट्‌टी भी चिकनी होगी, तकलीफ पड़ेगी। बापा को सपोर्ट की जरूरत पड़ती थी, वे हाथ पकड़ कर चलते थे। पर, **गुरुहरि योगीजी महाराज** बोले– ***जाना पड़ेगा, कितने सालों से थेम्स नदी तप कर रही है; हमें उसका फल देने के लिए जाना है।*** **प.भ. अश्विनभाई पोपट** की वहाँ चश्मे की दुकान है और वे ख़ुद डॉक्टर भी हैं। सो, गुरुहरि योगीजी महाराज की ऐसी स्मृति करते हुए थेम्स नदी का दर्शन करके प.पू. गुरुजी उनकी दुकान पर गए। उन्होंने बड़े भाव से प.पू. गुरुजी की आँखें चॅक कीं और प.पू. गुरुजी के चश्मे बना कर भेजने के लिए कहा। उनकी दुकान से फ़ारिग होकर प.पू. गुरुजी एवं सभी हरिभक्त 'लेडी वॉक' लंदन '**गुणातीत ज्योत**' गए। **प.पू. निर्मलस्वामिजी, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. अश्विनभाई** भी वहाँ पहुँच गए थे। गुणातीत ज्योत में भी स्मृति भेंट देने के लिए, प.पू. गुरुजी **ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी** की पुश पिन आर्ट की मूर्ति बनवा कर ले गए थे। **डॉ. दिव्यांग** ने *'व्हाला रुमझुम करतां कान मारे घेर आवो रे...'* भजन गाकर ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी की मूर्ति का स्वागत किया।

दरअसल, गुणातीत ज्योत की इस जगह पर ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी स्थूल रूप से नहीं आए थे। सो, ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी की मूर्ति लेकर प.पू. गुरुजी जब आए, तो वहाँ की बहनों को ऐसा लगा कि मूर्ति के रूप में ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी स्वयं वहाँ पधारे हैं।

इस दिन **प.पू. वशीभाई** खास तौर से प.पू. गुरुजी से मिलने पेरिस से बाय कार लंदन आए थे। रात भी उनके साथ अनुपम मिशन में ठहरे और गुणातीत ज्योत भी साथ आए। **पू. शोभना बहन** ने ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी की मूर्ति व लोगो वाले प्रसाद के बॅग्ज़ देकर सभी को विदा किया। वे बॅग्ज़ पूरे ट्रिप में भोजन रखने के लिए बहुत काम आए। प्रसाद लेकर सभी अनुपम मिशन वापिस लौटे। वहाँ अनुपम मिशन इन्टरनेशनल कमिटी के प्रेसीडेन्ट एवं **प.पू. साहेबजी के निजी प.भ. सतीषभाई चटवाणी** प.पू. गुरुजी से मिलने के लिए बैठे ही थे।

अगले दिन **9 अगस्त** को नेस्डन में 'बॅप्स' द्वारा निर्मित '**स्वामिनारायण मंदिर**' की आरती के दर्शन का लाभ लेकर सभी ने ब्रह्मस्वरूप काकाजी की प्रसादी का स्थल '**एलेगज़ेन्ड्रा पैलेस**', '**लंदन स्कूल ऑफ इकॉनॉमिक्स**' जहाँ उन्होंने पढ़ाई की थी एवं व्यापार के लिए वे जब लंदन आते और जिस '**सॅवाय हॉटल**' में ठहरते थे, इन स्थलों का दर्शन किया। रास्ते में प.पू. गुरुजी ने भी बाहर से नेस्डन-स्वामिनारायण मंदिर का दर्शन किया। सायं दिल्ली के आत्मीय हरिभक्त **प.भ. धीरूभाई कापड़िया साहेब के बेटे प.भ. मिहिरभाई कापड़िया** के घर प.पू. गुरुजी, संतगण, बहनें और कुछ हरिभक्त पू. हिंमतस्वामी के साथ गए। प.पू. गुरुजी के स्वागत में उन्होंने अपने घर को मोमबत्तियों इत्यादि से सजाया था। वहाँ प्रसाद लेकर **प.भ. किशोरभाई मास्टर्स** के घर होते हुए अनुपम मिशन लौटे। उसी दौरान अन्य हरिभक्त '**लंदन आई**' में बैठने के लिए गए।

दूसरे दिन **10 अगस्त** लंदन शहर से थोड़ी दूरी पर **लॅस्टर** के हरिभक्तों के घर गए। वहाँ ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी कई बार गए थे। सबसे पहले **पू. विमु मासी** के घर पहुँच कर भजनों से गुरुहरि योगीजी महाराज की स्मृति करके प्रसाद लिया। वहाँ से **पू. पुष्पाबेन** के घर गए। उन्होंने बताया कि ब्रह्मस्वरूप काकाजी को वे हमेशा राखी बांधती थी। उसी स्मृति में उन्होंने प.पू. गुरुजी के लिए भी राखी भिजवाई और... प.पू. गुरुजी ने ब्रह्मस्वरूप काकाजी का सिल्वर मोमेन्टो उन्हें भेंट

रूप भिजवाया। तत्पश्चात् प.भ. अशोकभाई राठोड़, प.भ. शरद्भाई, प.भ. जयंतीभाई कोहिल और प.भ. मुकेशभाई पटेल के घर हो करके लंदन वापिस आने के लिए निकले।

प.पू. गुरुजी के लंदन के मुकाम दौरान **पू. हिंमतस्वामी** – जो कि अनुपम मिशन के महंत कहे जाएँ, उन्होंने **एक सेवक की अदा से** प.पू. गुरुजी एवं सभी मुक्तों की छोटी से छोटी जरूरत का भी स्वयं खूब ख्याल रखा। इसी प्रकार **पू. प्रफुल्लभाई, पू. पंकजभाई, पू. भावीशा** एवं **साथियों** ने खूब अपनेपन से प.पू. गुरुजी एवं मुक्तों के भोजन की व्यवस्था की। उनकी ऐसी भक्ति के लिए उन्हें अंतर से नमन है। **प.भ. किशोरभाई मास्टर्स**, जो सिर्फ एक ही बार ब्रह्मस्वरूप काकाजी से मिले और आज हर पल उन्हीं की स्मृतियों से भरपूर हैं। उन्होंने लंदन में ब्रह्मस्वरूप काकाजी की प्रसादी की जगह के दर्शन करवा कर भक्तों को नई स्मृतियों से भर दिया।

11 अगस्त की सुबह 11:00 बजे प.पू. गुरुजी एवं सभी को पेरिस जाना था, तब निकलते-निकलते प.पू. गुरुजी, ब्रह्मज्योति पर मंदिर की नींव जहाँ डाली है, वहाँ प.पू. साहेबजी की आज्ञा से धुन एवं मंत्रपुष्पांजलि करके 'सेन्ट पेनक्रॉस' स्टेशन के लिए निकले और 'यूरोस्टार' ट्रेन से पेरिस के लिए रवाना हुए। पेरिस में 'गार्डनॉर' स्टेशन पर प.पू. वशीभाई, प.भ. प्रवीणभाई एवं भाभियाँ रीसीव करने के लिए आई थीं। वहां से प.पू. गुरुजी सीधा **'एस्पेस विनीज़े'** हॉल – जहाँ महोत्सव होना था, वहाँ पहुँचे और धुन करवाई।

12 अगस्त की सायं **भजन संध्या** से महोत्सव की शुरुआत होनी थी। सभा हॉल के प्रवेश द्वार के नज़दीक ही कलात्मक मंदिर की दोनों ओर ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी की लाईफ साईज़ खड़ी मूर्ति मानो सभी भक्तों का स्वागत कर रही थीं। हॉल में दाखिल होते ही एक मंच पर मुंबई - पवई से जुड़े **प.भ. विकासभाई वडालकर** द्वारा तैयार किए **'दिव्य अनुग्रह रथ'** का दर्शन हो रहा था, जिसमें सारथी स्वरूप ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी की मूर्ति पधराई हुई थी। भावना ऐसी थी कि इस रथ में जो बैठे, वह ऐसे समर्थ सारथियों की उष्मा से सदैव के लिए निर्भयता एवं निश्चिंतता महसूस करे। मुख्य मंच पर स्वरूपों के आसनों के बीचोंबीच स्क्रीन पर ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी की विविध मूर्तियों एवं उनके द्वारा मिले सूत्रों का दर्शन हो रहा था। हॉल के एक हिस्से में 'गुणातीत समाज' के इतिहास की जानकारी देती 'टाइम लाईन' का दर्शन हो रहा था।

आवाह्न श्लोक के बाद सर्वप्रथम पेरिस मंडल की युवतियों ने 'अभिवंदन... अभिवंदन...' भावनृत्य से सभी का स्वागत किया। **6 अगस्त** को गुणातीत ज्योत – विद्यानगर में **ब्रह्मस्वरूपिणी बेन** ने 99 वर्ष की आयु पूरी करके शताब्दी वर्ष में प्रवेश करते हुए अक्षरधामगमन किया था; सो, गुणातीत ज्योत, भक्ति आश्रम, अक्षरधाम मंदिर – पवई, अक्षरज्योति एवं शिकागो की साधक बहनों ने मिल कर मंच पर उनकी मूर्ति पधराई और पूजन, पुष्पहार एवं धुन से भावांजलि अर्पण की। **प.पू. ज्योति बहन** पेरिस उत्सव के लिए पहले ही स्वीट्ज़रलैन्ड आ गईं थी और दो दिन बाद पेरिस के लिए रवाना होने वाली थीं, लेकिन प.पू. बेन की नासाज़ तबियत की खबर मिलते ही वे भारत लौट आईं और बाद में पवई की बहनों के साथ आशिष पत्र भेजा।

आज गुणातीत समाज के प्रथम प्रमुख श्री एवं व्रतधारी भक्त के रूप में जाने जाते **पू. गोरधनकाका**

का भी स्मृति दिन होने के कारण धुन करके उन्हें भी भावांजलि दी गई। तत्पश्चात् ***‘पप्पा तमारी जीवनगीता...’*** भजन पर पेरिस एवं पवई की युवतियों एवं भाभियों ने भक्तिनृत्य प्रस्तुत करके ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी के श्रीचरणों में अपनी भावना प्रकट की और लंदन के सद्भावी गायक **प.भ. अर्पणभाई**, पवई मंदिर से खूब घनिष्ठता से जुड़े संगीत निर्देशक **प.भ. आशिषभाई गेरसोम**, गुणातीत ज्योत से **पू. इलेशभाई** एवं साथियों ने मिल कर ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी की दिव्य स्मृति कराते भजनों से माहौल को दिव्यता से भर दिया। तत्पश्चात् प.पू. साहेब, प.पू. गुरुजी, प.पू. निर्मलस्वामिजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. बापु, प.पू. शांतिभाई साहेब, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, प.भ. दिलीपभाई भोजाणी एवं प.भ. सतीषभाई चटवानी ने दीप प्रज्ज्वलित करके महोत्सव का प्रारंभ किया।

प.भ. प्रवीणभाई लाड के अंतर से स्वागत उद्गार के बाद ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी की मूर्ति को दिल्ली मंदिर द्वारा गुणातीत समाज के ध्वज के रंगों का हार अर्पण किया गया। लंदन-अनुपम मिशन के भाँति अंग्रेजी पुस्तक **‘सुप्रीमसी ऑफ लॉर्ड स्वामिनारायण’** का उद्घाटन यहाँ प.पू. दिनकरभाई के वरद् हस्तों से हुआ। **डॉ. दिव्यांग** ने उसका परिचय दिया। तत्पश्चात् पवई मंदिर द्वारा खास इस उत्सव के स्मृति चिह्न के साथ चांदी के वरक की ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी की मूर्ति का अनावरण **प.पू. बापु** ने किया। उत्साहभरे एवं माहात्म्ययुक्त आशिषवर्षा में सभी को भिगो कर **प.पू. साहेबजी** ने इस सत्र की पूर्णाहुति की।

13 अगस्त सुबह प.पू. वशीभाई के सान्निध्य में पेरिस, लंदन, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, मुंबई, दिल्ली के आत्मीय युगलों ने महापूजा का अद्भुत लाभ लेते हुए दिव्यता की अनुभूति की। महापूजा के बाद प.पू. भरतभाई एवं प.पू. निर्मलस्वामिजी ने आशीर्वाद दिया। पेरिस के **प.भ. यतिनभाई** एवं **प.भ. अंकुरभाई** (प.भ. प्रवीणभाई लाड के बेटे) ने मूलतः गुजराती भाषा की पुस्तिका **‘कृपाप्रसाद’ का** खूब परिश्रम से **फ्रेन्च अनुवाद** करके उसे छपवाया था। सो, प.भ. अंकुरभाई ने फ्रेन्च भाषा में ही उसका परिचय देते हुए प.पू. गुरुजी के करकमलों से उसका उद्घाटन करवाया। अंत में प.पू. गुरुजी, प.पू. शांतिभाई साहेब एवं प.पू. दिनकरभाई के आशिष प्राप्त करते हुए सत्र का समापन हुआ।

विदेश में आज चहुँ ओर ‘स्वामिनारायण’ का जो ध्वज लहरा रहा है, उसकी **नींव में ब्रह्मस्वरूप काकाजी** ही समाए हैं, जिन्होंने गुरुहरि योगीजी महाराज की आज्ञा से सर्वप्रथम अफ्रीका में सत्संग के बीज डाले और... फिर लंदन, युरोप में भी पूर्व के मुक्तों को ढूँढ-ढूँढ कर अपना संबंध दिया। केवल संबंध ही नहीं, बल्कि अपनी लाक्षणिक अदा व अपनेपन से सभी के जीवन का केन्द्र भी बन गए। **बाद में ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी ने भी** अपने स्पर्श, वाणी और संकल्प से सबकी परवरिश की। सो, ऐसे युग पुरुषों के अद्भुत कार्य की झांकी एवं उनसे मिले गुणातीत ज्ञान को सर्व व्यापक करने की भावना से पेरिस के मुक्तों ने आज सायं 7:30 बजे **‘दिव्य अनुग्रह पायो’** के रूप में नृत्यनाटिका प्रस्तुत की। गुणातीत समाज के साथ खूब आत्मीयता से जुड़े **प.भ. प्रदीपजी, सौ. वेदकुमारीजी, प.भ. आशिषभाई गेरसोम** एवं **श्री जयेन्द्र शेखड़ीवाला** ने पूर्व हो चुके गुणातीत समाज के कई प्लेज़ की भाँति इसमें भी मानो अपना दिल निचोड़ दिया। पेरिस, शिकागो, पवई के मुक्तों ने भी

प्ले में अपना अभिनय जिस भक्तिभाव से किया, वही बंधुजोड़ी की महिमा का दर्शन कराता है। प्ले पूरा होने के बाद प.पू. स्वामिजी, प.पू. साहेबजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. निर्मलस्वामिजी, प.पू. दिनकरभाई एवं सभी वडील मंच पर पधारे और सभी पात्रों की खूब सराहना की। प.पू. स्वामिजी ने तो प्ले के शीर्षक 'दिव्य अनुग्रह पायो' को सार्थक करते हुए ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी की जीवन रीति को जीवन उद्देश्य बनाने का संकेत देते हुए करीब एक घंटे तक आशिष वर्षा की। महोत्सव के भव्य जयघोष से रात को 11:15 बजे इस सत्र की पूर्णाहुति हुई।

महोत्सव के अंतिम दिन **14 अगस्त** की सुबह प्रथम सत्र के प्रारंभ में प.पू. वशीभाई ने इस उत्सव के मर्म और उसका आध्यात्मिक हार्द समझाते हुए आशिष प्रदान किया। **प.भ. दिलीपभाई भोजाणी, प.भ. सतीषभाई चटवानी, पू. दासस्वामिजी, प.भ. किशोरभाई मास्टर्स** ने अपने प्रासंगिक उद्बोधन द्वारा ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी द्वारा हुई दिव्य अनुभूतियों - उनके अभिप्राय की भक्ति को सभी मुक्तों में वितरित किया।

प.भ. सतीषभाई चटवानी ने अक्षरपुरुषोत्तम उपासना के उद्घोष, उसके लिए गुणातीत पुरुषों द्वारा किए परिश्रम व उनके अंतर में छिपी भावना और अभिप्राय को साफ़ - साफ़ शब्दों में दिल की जिस सच्चाई से प्रकट करके सभी को जो प्रेरणा दी, **उसे सुन कर प.पू. गुरुजी इस कदर खुश हुए कि अपने सोफे से उठ कर प.पू. साहेबजी से गले लग कर उन्हें 'धन्यवाद' देने का मन हो आया,** पर प.पू. साहेबजी को अपने से बड़ा मानते हुए 'क्षोभ' से नहीं किया! **पू. चटवानी साहेब में ऐसी गहरी समझ प.पू. साहेबजी ने ही भरी होगी न?**

तत्पश्चात् **प.पू. बापु** ने उत्सव निमित्त मुक्तों द्वारा की गई सेवा के लिए धन्यवाद करते हुए आशीर्वाद दिया और 1978 में ब्रह्मस्वरूप काकाजी की हीरक जयंती के उपलक्ष्य में प.पू. स्वामिजी ने जिस ग्रंथ को ब्रह्मस्वरूप काकाजी के प्रति अपनी भक्ति से भर दिया था, ऐसी अनमोल गुजराती पुस्तक **'सहृदयी'** की द्वितीय आवृत्ति का प.पू. स्वामिजी के वरद् हस्त अनावरण हुआ। **प.पू. साहेबजी** ने प.भ. प्रवीणभाई, प.भ. ठाकोरभाई एवं पेरिस मंडल के सभी मुक्तों की भक्ति से प्रसन्न होकर आशिष बरसाए।

सायं 7:00 बजे आवाह्न भजनों से 'बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव' का अंतिम सत्र शुरू हुआ। ढाई दिन महोत्सव का सभा संचालन करने के बाद प.भ. अमितभाई ने अंतिम सभा के संचालन की सेवा **पू. यज्ञप्रियस्वामी** को सौंपी। सर्वप्रथम **प.पू. भरतभाई** से आशिष पाकर **प.भ. अमितभाई** (शिकागो) ने सभी की ओर से मार्मिक आशिष याचना की। वर्षों पहले ब्रह्मस्वरूप काकाजी के लिए पू. दासस्वामी ने '*हे स्नेहलसिंधु दयाळु प्रभो...*' भजन जो बनाया था, उसी का इस शताब्दी महोत्सव निमित्त नवीनीकरण करके **पू. दासस्वामी** ने पू. राकेशभाई शाह के साथ मिल कर सुनाया और सभी को दिव्य बंधुजोड़ी की स्मृतियों से भर दिया। भजन के बाद पू. यज्ञप्रियस्वामी ने **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** द्वारा भेजा आशिष पत्र पढ़ा। तत्पश्चात् **प.पू. दिनकरभाई** ने 'योगी गीता' के छठे मुद्दे 'सुहृद्भाव का बड़ा गुण सीखना...' पर मननीय मार्गदर्शन देकर आशिष बरसाए। दिव्य बंधुजोड़ी की शताब्दी के प्रथम चरण के उपलक्ष्य में दिल्ली मंदिर से **पू. आनंदी दीदी** की प्रेरणा से पू. राकेशभाई एवं डॉ. दिव्यांग ने – *'अक्षरधाम से योगीजी लेकर आए दिव्य ये जोड़ी...'* – *'योगीजी की मरजी*

वही लक्ष्य तुम्हारा...' भजन अर्पण किया। गुणातीत ज्ञान के रहस्य से भरे **प.पू. गुरुजी** के आशीर्वाद के बाद पवई मंडल के मुक्तों ने *'काकाजी-पप्पाजी अमर रहेंगे...'* भजन द्वारा भक्ति अर्घ्य अर्पण किया।

जिनकी बदौलत आज हम सब अक्षरधाम का दिव्य सुख ले रहे हैं, ऐसे **ब्रह्मस्वरूप काकाजी-ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी का विडियो द्वारा दर्शन करके एवं आशीर्वाद** पाकर शताब्दी महोत्सव का हार्द समझा और धन्य हुए। **प.पू. स्वामिजी** के आशीर्वाद की गुंजन से अंतर में शाश्वत् स्मृति प्रगटाते महोत्सव का समापन करीब तीन फुट ऊँचे **'एफिल टावर'** की प्रतिकृति रूपी केक के प्रसाद से हुआ।

अंत में उपस्थित मुक्तों एवं स्वयंसेवकों ने आनंदोत्सव करके कई दिनों की थकान को जोश से भर दिया और 'बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव' के जयघोष के साथ सभी स्वयंसेवक हॉल को खाली करने की सेवा में जुट गए... सभा एवं भोजन के हॉल में अलग-अलग जगह पर रखे ब्रह्मस्वरूप काकाजी, ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी एवं प.पू. स्वामिजी के अत्यंत प्रेरणादायी सूत्रों का मनन करते हुए एवं प्रसाद लेने के पश्चात् मिलते मुखवास पर लिखे सूत्रों की जुगाली करते हुए स्वरूपों से मिले आशीर्वाद की गठरी बांध कर सभी ने प्रस्थान किया।

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी पेरिस के इस उत्सव में भले ही स्थूल रूप से हाज़िर नहीं हो पाए, लेकिन सर्वदेशीयता के अद्भुत उठाव की झांकी कराते हुए अनेक मुक्तों को उन्होंने पेरिस उत्सव का गुजरात में ही दर्शन करवाया। इन्हीं दिनों वलसाड के नज़दीक **ए.एक्स.एन रिसोर्ट** में दि. **13** से **15** अगस्त तक प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की निश्रा में सांकरदा मंदिर के संतों और सेवकों ने खूब माहात्म्य व भक्ति से शिविर का आयोजन किया और गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों के करीब 400 मुक्तों ने लाभ लिया। पहले दिन, श्री ठाकुरजी और ब्रह्मस्वरूप काकाजी व ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी की मूर्तियों को रथ पर विराजित करके, सेवक की अदा से उसे चलाते हुए प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने रिसोर्ट के प्रवेश द्वार से सभा मंडप तक सभी को दर्शन दिए... सत्संग के साथ-साथ सभी भक्तों ने आनंदोत्सव किया। रिसोर्ट के स्वीमिंग पुल में प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने प्रसादी का पानी सभी पर छांट कर जल्द ही जीतेजी अक्षरधाम का सुख पाने का संकल्प कराते हुए आशीर्वाद दिया।

पेरिस उत्सव के बाद प.पू. गुरुजी मुक्तों के साथ दो दिन पेरिस में ही ठहरे। कई महीनों से उत्सव की तैयारियों से खूब थके होने के बावजूद अगले ही दिन **15 अगस्त** की सायं प.भ. प्रवीणभाई ने सभी को पीज़ा का प्रसाद लेने के लिए अपने घर बुलाया था। वहाँ से प.पू. गुरुजी देर रात को **प.भ. नवनीतभाई** की दुकान पर गए, जिन्होंने लंदन के **प.भ. किशोरभाई जेठवा** के साथ महोत्सव के भोजन की सेवा उठा ली थी। इस दौरान प.पू. गुरुजी ब्रह्मस्वरूप काकाजी के प्रसादी स्थल देखने के लिए गए, जिसमें एक है **'एफिल टावर'**। वहाँ प.पू. गुरुजी ने सभी को ऊपर जाने के लिए कहा और ख़ुद नीचे बैठे रहे। सबके इकट्ठे होने के बाद ब्रह्मस्वरूप काकाजी की स्मृति देते हुए पंद्रह मिनिट धुन करवाई और प्रसाद दिया। इर्द-गिर्द कई विदेशी भी जो उत्सुकता से खड़े होकर देख रहे थे, उन कइयों को भी प्रसाद दिया। बोट क्रूज़ में बैठ कर पेरिस के भक्तों के द्वारा दिया प्रसाद सभी ने लिया। **'बार्बर चर्च'** जहाँ ब्रह्मस्वरूप काकाजी ने प.भ. प्रवीणभाई के आग्रह पर अपना पोर्ट्रेट बनवाया था, वह देखने के लिए गए। **'वर्साइल्स**

पैलेस' के अंदर न जाकर ब्रह्मस्वरूप काकाजी जिस गार्डन में गए थे, वहाँ बैठ कर प.पू. गुरुजी ने धुन करवाई।

पेरिस में **प.भ. रोहितभाई गांधी** के घर प.पू. गुरुजी ठहरे थे। वे नए ही संपर्क में आए थे, लेकिन प.पू. वशीभाई के वचन से खूब भक्तिभरे हृदय से उन्होंने प.पू. गुरुजी के लिए अपने घर में बहुत अच्छी सुविधा कर दी थी। भारत की भाँति लंदन में भी राईट हॅन्ड साइड ड्राईविंग का चलन है। पेरिस उत्सव दौरान, अपनी राईट हॅन्ड साइड कार के साथ लंदन के **प.भ. दिलीपभाई भोजाणी** ख़ुद प.पू. गुरुजी की सेवा में रहे। उससे प.पू. गुरुजी को कार में बैठने-उतरने की खूब सुविधा रही।

ऐसे ही **प.भ. शम्भुभाई** ने दिल्ली मंडल के साथ घूम कर प्रसादी के स्थलों का दर्शन कराने की अद्‌भुत सेवा की। दरअसल, महोत्सव दौरान पेरिस मंडल का एक-एक हरिभक्त जो कई सेवाओं में ओतप्रोत था, वही उनकी ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी के प्रति अनोखी प्रीति का दर्शन करा रहा था।

लंदन व पेरिस में प.पू. गुरुजी के घूमने का मक़सद एक ही था कि बस, ब्रह्मस्वरूप काकाजी व ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी के प्रसादी के स्थल देखने हैं।

17 अगस्त को पेरिस से 'टी.जी.वी.' ट्रेन द्वारा स्वीट्ज़रलैन्ड के लिए रवाना होना था। तब पेरिस से विदा लेते हुए प.पू. गुरुजी ने सभी को एक मर्म की बात की –

ब्रह्मस्वरूप काकाजी का यह उत्सव पेरिस में क्यों हुआ ? पेरिस इज़ 'ए सिटी ऑफ लव'। इट इज़ सिम्बॉलिक। ऐसे ही काकाजी वॉज़ ए ट्रान्सिन्डन्टल लवर। सो, विदेश में यहीं प.पू. काकाजी की शताब्दी मनानी ज़ायज़ ठहरती है!

यूँ कहें कि पूरे ट्रिप में प.पू. गुरुजी ने हर जगह ब्रह्मस्वरूप काकाजी की ही स्मृति की और दी।

सुबह 11:00 बजे प.भ. प्रवीणभाई लाड एवं पेरिस मंडल के मुक्तों से भावभीनी विदाई लेकर 'टी जी वी' ट्रेन द्वारा प.पू. गुरुजी एवं मंडल स्वीट्ज़रलैन्ड – जिनिवा के लिए रवाना हुए। प.पू. गुरुजी एवं संतों के लिए पेरिस के हरिभक्त प.भ. पनिशभाई एवं प.भ. भरतभाई पहले ही अपनी गाड़ी लेकर 'जिनिवा' स्टेशन पहुँच गए थे। स्टेशन से सबसे पहले **'कॉक्स एण्ड किंग्ज़'** द्वारा बुक किए भारतीय रेस्तरां में भोजन करने के लिए गए। वहाँ से जिनिवा का मशहूर – फ्लोरल क्लॉक और फाउंटन देखा। तत्पश्चात् लेसिन के होटल में जाते हुए बीच में यू.एन.ओ. के हेड क्वार्टर के बाहर ब्रोकन चेयर व यू.एन.ओ. के गेट पर फोटो खिंचवा कर भक्तों को आनंद कराया और स्मृतियाँ दीं। रात को लेसिन के होटल में ठहरे। **यूनो हेड क्वार्टर** के बाहर फोटो खिंचवाने का मक़सद बताते हुए बाद में **प.पू. गुरुजी** ने कहा था कि –

यहाँ हमारे प.पू. प्रमुखस्वामी महाराज बिराजे थे और संतों ने वेदगान किया था; सो विदेश की धरती पर हमारे लिए यह स्थान का खूब गौरव है – माहात्म्य है!

स्वामी की बातों में लिखा है कि हमें जितना सत्पुरुष से लगाव है, हम से कई गुणा उन्हें हम से होता है। यूं ट्रिप की शुरुआत से लेकर आख़िर तक प.पू. गुरुजी की भक्तों के प्रति अनुपम प्रीति का दर्शन होता रहा। उनका यही उद्यम था कि अपने साथ ले गए भक्तों को ब्रह्मस्वरूप काकाजी के प्रसादी स्थलों का दर्शन और आनंद कराऊँ।

18 अगस्त को सभी **'ट्रम्बलबॅक्स फॉल्स'** देखने के लिए गए। वहाँ एक जगह तक लिफ्ट से

जाने के बाद सीढ़ियों के सौ स्टेप चढ़ने थे। अतः प.पू. गुरुजी ने पहले तो जाने के लिए मना किया, लेकिन सभी के चले जाने के बाद लिफ्ट जहाँ तक जाती है, वहाँ तक जाने का प्लान करते हुए प.पू. गुरुजी ने कहा – *इतने समय तो आप लोगों के साथ रह सकूँ।* पर, रास्ते में हुए विलंब के कारण वहाँ जा न सके और सीधे **'यँगफ्रो'** टॉप ऑफ धी यूरोप देखने के लिए गए। वहाँ बर्फ में प.पू. गुरुजी ने सभी को स्मृतियाँ दीं। वहाँ से ट्रेन में बैठ कर लौटते हुए प.पू. गुरुजी के लिए कार लेकर पेरिस से आए प.भ. पनिशभाई, प.भ. भरतभाई व सभी के साथ बात करते हुए कहा –

ये फंक्शन का साफल्य इसे कहा जाए – जैसे कि मैंने दिल्ली में हुए 2012 के फंक्शन में सभी को कहा था कि उत्सव के फलस्वरूप हम सभी एक-दूसरे के करीब आएँ, हमारा सुहृद्भाव और मैत्रीभाव आपस में बढ़े...

दूसरी बात – ट्रिप के अंतिम दिन थे, सो सभी को मातृभूमि की याद आने लगी थी कि घर जाना है और **प.पू. गुरुजी ने तो स्वीट्ज़रलैन्ड में प्रवेश करते ही मानो रट लगा दी और अपने हाथ से इशारा करते हुए कहते कि –**

'घरे जवु छे... घरे जवु छे...'

और साथ-साथ खूब मार्मिक बात की –

आप सब अपनी फॅमिली को मिस करते हो। कोई अपने बेटे को या बहू को मिस कर रहा है। पर, मैं मिस करता हूँ सेवक विश्वास को, सुहृद्स्वामी को, नक्षु को। मैं अपनी फेमीली को मिस करता हूँ। पर, आपके और मेरे मिस करने में आकाश और पाताल का फर्क है!

19 अगस्त की सुबह होटल से निकल कर इन्टरलॅकन होते हुए दोपहर को लुज़र्न पहुँचे। वहाँ मुक्तों ने थोड़ी खरीदारी की। प.पू. गुरुजी ने भी दिल्ली से न आ पाए मुक्तों को याद करते हुए कुछ स्मृति भेंट खरीदी। रात को 'हॉली डे इन' होटल में आकर ठहरे।

लंदन से लेकर पेरिस ट्रिप तक **प.पू. वशीभाई** ने प.पू. गुरुजी की तबियत का खास ख्याल करते हुए अच्छी से अच्छी सुविधा करवाई। **प.भ. प्रवीणभाई लाड** ने अपने भाव प्रगट करते हुए मुक्तों से यहाँ तक कहा – *मैंने काकाजी से वीटो पावर ली है कि गुरुजी की तबियत यहाँ भी और भारत लौटने के बाद भी खूब अच्छी रहे।* प.पू. गुरुजी पेरिस आने के लिए तैयार नहीं हो रहे, यह जान कर **प.पू. साहेबजी** ने भी तो प.पू. गुरुजी को आशीर्वचन दिए थे कि –

गुरुजी, आप पेरिस जरूर आ जाना; आपकी तबियत की क्या बात? आपके आने से वहाँ सब की तबियत ठीक हो जाएगी – रहेगी।

और वाकई, इस पूरी यात्रा के दौरान प.पू. गुरुजी फीट एन्ड फाईन रहे - दिखाई दिए!

पेरिस होटल में ठहरने दौरान मुंबई के **प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी** एवं **सौ. डॉली दीदी** ने सुबह की चाय बना कर हर एक मुक्त के कमरे तक पहुँचाने की सेवा की और... उन मुक्तों के भीतर बसी प्रभु की मूर्ति हासिल कर ली। इसी प्रकार, **प.भ. राकेशभाई, प.भ. पुनीतजी, प.भ. गौरव गर्ग, प.भ. आशिष, डॉ. दिव्यांग और सौ. रेखा भाभी** ने प.पू. गुरुजी एवं मुक्तों की हर प्रकार से सुविधा का खूब ख्याल रख कर भक्ति अदा की।

20 अगस्त - रक्षाबंधन की सुबह आठ बजे, चौदह दिन के बाद प.पू. गुरुजी अपने साथ लाए मुंबई, अमदावाद, हरियाणा, पंजाब एवं दिल्ली के मुक्तों के साथ ज़्यूरिक एयरपोर्ट जाने के लिए

निकले। दोपहर 12:45 की **स्विस इन्टरनेशनल एयरलाईन्स LX 146** से भारत-दिल्ली के लिए रवाना हुए। फ्लाईट में प.पू. गुरुजी ने हरिभक्तों को 'राखी' बांध कर अनोखी स्मृति दी। वहाँ प्लेन में बैठे हुए सभी दिल्ली पहुँचने का बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे, तो इधर दिल्ली में भी पू. सुहृद्स्वामी एवं पू. दीदी की निश्रा में सभी प.पू. गुरुजी के स्वागत के लिए जुटे थे और आतुर थे कि – बस, अब इतने ही घंटे बाकी हैं कि मंदिर की रौनक-प्राण लौट आएँगे।

रात को करीब 12:00 बजे दिल्ली के इंदिरा गांधी इन्टरनेशनल एयरपोर्ट टी-3 पर फ्लाईट लेन्ड हुई। प.भ. प्रमीतभाई के सहयोग से प.पू. गुरुजी एवं सभी इमीग्रेशन की औपचारिकता जल्दी निपटा कर बाहर आ गए। एयरपोर्ट पर संतों, हरिभक्त, प.पू. दीदी एवं भाभियाँ मिल कर करीब चालीस मुक्त प.पू. गुरुजी का स्वागत करने के लिए खड़े थे।

एयरपोर्ट से बाहर निकलते ही प.पू. गुरुजी ने नीचे झुक कर मातृभूमि की पवित्र मिट्टी को माथे से लगाया।

प.पू. गुरुजी के एयरपोर्ट से निकलते ही अन्य सभी तेजी से मंदिर के लिए रवाना हो गए, ताकि प.पू. गुरुजी से पहले मंदिर पहुँच कर वे भी स्वागत में शामिल हो जाएँ। प.पू. गुरुजी के प्रति अजोड़ भक्ति अदा करने प्रेरणा देती प.पू. दीदी की आज्ञा से मंदिर के गेट के सामने आठ-दस अनार जला कर गाड़ी में बैठे प.पू. गुरुजी का स्वागत किया। मंदिर प्रवेश करते ही एक ओर हरिभक्त भाई गुलाब की पंखुड़ियों से स्वागत कर रहे थे, तो दूसरी ओर थोड़ी दूर बहनें-भाभियाँ गुब्बारे हाथ में लेकर अपना आनंद व्यक्त कर रही थीं। मंदिर पर की गई लाईटिंग सभी को अपनी ओर आकर्षित कर रही थी। **'चिदाकाश'** के द्वार को केल के पत्तों एवं फूलों से सजाया था और बड़े अक्षरों से लिखा था – *आओ, पधारो प्राणाधार!* पुष्पों के गालीचे पर चल कर प.पू. गुरुजी द्वार पर आए, तो पू. सुहृद्स्वामी व प.भ. पुरी अंकल ने पूजन व हार पहना कर उनका स्वागत किया। 'चिदाकाश' हॉल में भी सजावट की हुई थी और दो जगह लिखा था – *'लाँग लीव गुरुजी'* और *'आप ही इस मंदिर के प्राण हैं।'*

हॉल में प्रवेश करके फ्रेश होने के बाद, प.पू. गुरुजी अपने सोफे पर बैठते ही बोले –

अपना देश - अपना देश, अपना शहर - अपना शहर, अपने लोग-अपने लोग, अपना सोफा-अपना सोफा...

फिर सहज ही मुक्तों ने 'परदेस' पिक्चर के गाने की निम्न पंक्तियाँ बजाईं –

'लंदन देखा, पेरिस देखा और देखा जापान
माइकल देखा – एल्विस्ट देखा, सब देखा मेरी जान।
सारे जग में कहीं नहीं है दूसरा हिन्दुस्तान...'

इसे सुन कर **प.पू. गुरुजी** एक छोटे बच्चे की भाँति मानो रो पडे और भावुकताभरी नम आँखों से वे सिर्फ इतना ही बोल पाए –

यह भले ही 'फ़िल्मी गाना' है, पर हक़ीक़त यही है। भारत जैसा कोई देश नहीं। मुझे समझ नहीं आता कि अपना देश छोड़ कर लोग वहाँ क्यों जाते होंगे? यहाँ के लोग जैसे कोई मनुष्य नहीं, इनके दिल जैसा कहीं दिल नहीं, अपने समाज जैसा कोई समाज नहीं! मुझे तो वहाँ अपना अनुपम मिशन, ज्योत और पेरिस के फंक्शन के सिवा कुछ रास नहीं आया।

तत्पश्चात् लंदन - पेरिस ट्रिप दौरान **पू. दृष्टि दीदी** एवं **पू. गार्गी दीदी** द्वारा की गई सेवा से प्रसन्न होकर प.पू. गुरुजी ने अपनी प्रसादी का हार प.पू. दीदी के वरद् हस्तों दोनों को पहनवाया और प्रसादी

की माला व राखी भी भिजवाई। धुन करके प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दीदी ने सब को चॉकलेट का प्रसाद दिया।

रात के ढाई बज गए थे, लेकिन घर जाने का किसी का भी मन नहीं था, क्योंकि पंद्रह दिन के बाद मुक्तों को प.पू. गुरुजी के दर्शन हो रहे थे। भीतर में वियोग की एक तड़प थी! तकरीबन **तीन बजे तो प.पू. गुरुजी सोए होंगे और सुबह 6:40 की धुन के लिए तो जाग भी गए। इतने दिनों से थके होने के बावजूद और 76 साल की आयु में देर रात तक जागने के बाद भी धुन के लिए उनका उठना हमारे लिए खूब सोच मांग लेता है।** सच कहें तो **प.पू. गुरुजी का पारदर्शक जीवन ही बिना कहे उनका माहात्म्य दर्शाता है। वे जैसे ऊपर से हैं, वैसे ही भीतर से हैं** और जैसे भीतर से हैं, वैसे ही ऊपर से हैं। यही कारण है कि अल्प संबंध में आने वाले नए मुक्त भी उनकी ओर सहज ही खींचे जाते हैं और अपनेपन से सत्संग में जुड़ जाते हैं।

बार-बार **प.पू. गुरुजी** तो कहते हैं –

भारत जैसा कोई देश नहीं, हर प्रकार से यहाँ सुख-समृद्धि है।

हमें अपनी बुद्धि का सयानापन शंका में डाल देता है। पर, जैसा कि प.पू. गुरुजी ही अकसर कहते हैं कि अपने प्रभु तो प्रगट हैं; जब भी हमें ऐसी किसी बात पर आशंका होती है, तो बाहर के व्यक्ति में से भी प्रभु साख (गवाही) दे देते हैं और... यही हुआ कि ठीक **24 अगस्त 2013** के **नवभारत टाइम्स** में **ब्रिटेन के हाई कमिश्नर जेम्स बेवन** द्वारा भारत के विभिन्न सेक्टरों में विकास की संभावनाओं और आंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की बढ़ती महत्ता के संदर्भ में कहा निम्न कथन प्रकट हुआ –

'21वीं सदी में भारत में जन्म लेना लॉटरी जीतने जैसा है...'

जब विदेशी संस्कृति का व्यक्ति और वो भी **एक अंग्रेज़ यह बात कहे, तो वाकई हमें गर्व होना चाहिए कि जहाँ श्रीजी महाराज ने अवतरण किया, वहाँ हमें मानव जन्म मिला और... गुणातीत स्वरुपों ने हमें अपनी गोद में बिठा लिया!**

तो अब,

- 1 अक्तुबर – **प.पू. दिनकरभाई का प्राकट्य दिन**
- 12 अक्तुबर – **विजयादशमी,**
  प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी की पार्षदी दीक्षा तिथि
- 18 अक्तुबर – **शरद्पूर्णिमा, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी की प्राकट्य तिथि**
  एवं
  प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी की भागवती दीक्षा तिथि
  प.पू. दिनकरभाई की प्राकट्य तिथि
- 3 नवम्बर – **दिवाली**
  और
- 4 नवम्बर – **हिन्दु नूतन वर्ष, अन्नकूटोत्सव**

जैसे मंगलकारी दिनों की जब एक के बाद एक श्रृंखला चल रही है, तब अपने प्रगट प्रभु से संबंध दृढ़ करने की पुकार करने से बढ़ कर कोई उद्यम ही करने जैसा नहीं है। सो, इस हेतु पेरिस में हुए ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी के 'बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव' के प्रथम चरण निमित्त महानुभावों, महामुक्तों ने जो आशिष याचना की एवं स्वरुपों ने जो आशिष वर्षा की, उसका भगवत् कृपा के इस अंक से लाभ लेते हुए मनन-चिंतन करें और अपने मन-बुद्धि, तर्क-वितर्क से घिरे रहने और डूबे रहने के कारण प्राप्ति का आनंद जो खो देते हैं, वह महसूस करें...

7 अगस्त, 2013 – 'अनुपम मिशन', लंदन

प.पू. गुरुजी

...ये जो लड़के इतनी दूर रहते हुए साहेब को हाज़राहज़ूर मान कर जीते हैं, यह बात बहुत मुश्किल है। इसलिए तो अभी-अभी दिल्ली में किसी को कहना पड़ा कि गुरुजी 15-20 दिन के लिए बाहर जा रहे हैं, तो उनकी हाज़िरी में जैसे सब की सेवा-सरभरा होती है, वैसे करते रहना। वह कहना क्यों पड़ा होगा? किसी बात पर कुछ नोट किया गया होगा कि गुरुजी हाज़िर नहीं होते हैं, तो ठीक से कोई एटेन्टीव नहीं रहता। पर, मैंने देखा कि यहाँ ऐसा नहीं है...

सच में, यूँ हाज़िरी मान कर जीना मुश्किल है। हम कथा तो बहुत करते हैं। करते ही नहीं, बल्कि बहुत सुनते भी हैं। अन्यों को उपदेश भी दे देते हैं। ऐसा भी नहीं कि सिर्फ उपदेश देते हैं, खुद भी विचार तो करते ही हैं। लेकिन उसे अमल में लाना बहुत मुश्किल है। रामायण में बात आती है कि राम नाम से पत्थर तैर गए। साथ ही उसकी एक्सप्लेनेशन भी सुनते हैं कि रामजी की मूर्ति से अधिक उनका नाम पावरफुल है। यह भी फॅक्ट है। रामजी ने अपनी हाज़िरी में जितनों का कल्याण किया, उससे अधिक उनके बाद उनके मंत्र से हुआ होगा। इससे भी–यानि राम नाम से भी, उनकी मरजी के मुताबिक वर्तना अधिक है। काकाजी यह बात बताते थे। आप सब भी जानते होंगे कि वे कई-कितने फॉर्म्यूली देते थे–

'इस तरह नहीं, तो इस तरह... इससे आगे यह या इससे आगे यह।'

एक बार मैंने ही उनसे पूछा था कि उनकी मरजी के मुताबिक जीना इससे आगे और है?

तब बोले थे–*उनकी हाज़िरी मान कर वर्तना। तुम सब वर्त नहीं पाते हो।*

हम शायद मरजी के मुताबिक भी वर्तते हैं, लेकिन अपनी रीत से वर्त जाते हैं।

उसके लिए चाहिए अखंड दिव्यभाव! बहुत मुश्किल चीज है।

कई बार तो हमें कई बातों का ख्याल ही नहीं पड़ता।

जैसे कि काकाजी बात करते थे–*'मनुष्यभाव-मायिकभाव!'*

ज़रा-सा कुछ हो, तो हम मान लेते हैं कि मनुष्यभाव आ गया, मायिकभाव आ गया! पर, इन दोनों में जो फर्क है, उसका तो हमें कुछ ख्याल ही नहीं। एक बार मैंने काकाजी से पूछा कि–*काकाजी, आप मनुष्यभाव कहते हो, तो मायिकभाव कुछ अलग है या दोनों एक ही हैं?*

तो वे बोले–*नहीं, दोनों में फर्क है। कॉन्शियसनेस के लेवल्स का फर्क है।*

मैंने पूछा कि किस प्रकार? तो उन्होंने हनुमान व सुग्रीव के प्रसंग से बहुत अच्छी तरह समझाया...

मैं तो यहाँ इन लड़कों को देख कर खूब सोच में पड़ गया हूँ। एक बहुत अच्छा दर्शन हो गया। ऐसी जगह में, विषय में रहते हुए अलिप्त रहना। वह तो बात ही सारी कठिन है। पर, इससे भी अधिक साहेब को हाज़िर मान कर और वह भी साहेब को जैसे पसंद हो, उसी प्रकार! मैं यहाँ रह रहा हूँ, तो मुझे ख्याल तो पड़ता है न कि साहेब ने कितनी इन्स्ट्रक्शन्स दी होंगी। *'गुरुजी को मेरा रूम दे देना...'* पर, ऐसा भाव हम में सब जगह

डॅवलप होना चाहिए। सब जगह यानि–हमारे समग्र तंत्र के अंदर। हम में है, नहीं है ऐसा नहीं है। पर, एक लेवल पर ऐसा हो जाता है कि ऐसा तो नहीं ही करना है। वह सच में मुझे यहाँ से जानने को मिला। बहुत मुश्किल चीज है।

यहाँ का सारा कॅम्पस देखें तो! जगत में कहते हैं कि **'क्लीन्लीनेस इज़ गॉड्लीनेस'**। वह यहाँ दिखाई देता है! यहाँ ही नहीं, **ब्रह्मज्योति–मोगरी जाएँ, ज्योत में जाएँ तो–'क्लीन्लीनेस'।** वैसे भी मुझे पहले से सफाई बहुत पसंद। मैं कई बार कहता हूँ कि ज्योत या ब्रह्मज्योति के टॉयलेट जैसे हमारे हॉल साफ़-सुथरे नहीं होते। इसका कारण–सफाई रखनी है, इतना ही नहीं; साहेब को पसंद है, सो उसी प्रकार करना है–यह भावना है।

हम यहाँ आए हैं, तो यह सीख कर जाएँ कि काकाजी और पप्पाजी को क्या पसंद है। हम भले ही कितनी बातें करें और समझते भी हैं कि दोनों पुरुषों के हृदय में एक ही बात थी–'एकता'। कोई भेदभाव नहीं हो। बीच में मैंने अक्षरविहारीस्वामिजी को काग़ज़ भी लिखा था कि 1975 या 76 में **काकाजी** ने मुझे लिखा था–

मुद्दे का काम उठाना है। कोई जगह कोई भेदभाव न रहे, ऐसे सब तैयार हो जाओ।

यह जब दिखाई देता है, तब ऐसा होता है कि सच में तो ऐसे ही जीने जैसा है। वर्ना तो कितना भी बड़प्पन पाएँगे, उसकी भी कोई क़ीमत नहीं है। अश्विनभाई ने बात की कि–'सरलता', **हिंमतस्वामी ऐसे सरल हैं।** सब हिंमत 'स्वामी' कहते थे, तो मुझे ऐसा होता कि 'स्वामी' क्यों कहते होंगे? यह तो मुझे पता ही है कि संत ही हैं। पर, **सच में ये 'स्वामी' हैं।** यहाँ आया तो उनकी सेन्ट्लीनेस का ख्याल पड़ता है। **किसी को ख्याल नहीं पड़ता कि ये यहाँ हॅड हैं।**

हिमंतस्वामी, ऐसी साधुता हम सब में प्रगटे, ऐसी रोज़ प्रार्थना करते रहना। आशीर्वाद देने के लिए कहूँगा, तो वह आपको जँचेगा नहीं। तो, हमारे लिए प्रार्थना करते रहना कि हम सब में ऐसा सेवकभाव कहो, ऐसी साधुता कहो, ऐसी सरलता कहो, प्रगटे। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

8 अगस्त, 2013–'गुणातीत ज्योत', लंदन

प.पू. गुरुजी

...कई बातें हम अपने माईन्ड में कुछ फिक्स ही कर लेते हैं, पर 'कामिल–काबिल सब हुन्नर तेरे हाथ'–ऐसे संत हमसे जबरदस्ती भी करवा लेते हैं। जब से पेरिस के उत्सव की बात शुरू हुई, तब से मंदिर के निजी सेवकों-हरिभक्तों को मैंने कह रखा था कि सभी आएँगे तो मैं 'हाँ-हाँ' करने वाला हूँ; पर, मैं जाने वाला नहीं हूँ–यह पक्का है। आख़िर तक मैंने यही पक्का रखा था, पर... मैं भी खूब सोचता था कि मुझे ऐसा क्यों है?

मुझे पहले से ही ऐसा है कि हिन्दुस्तान के सिवा किसी भूमि पर मुझे नहीं जाना। प्रेज्युडाईझल माईन्ड होगा या कुछ भी कहो। मैंने बहुत पहले भी बात की थी कि पहले मैं भाईखला स्कूल में पढ़ता था। पाँचवी कक्षा के बाद मुंबई के फैलोशिप स्कूल में मेरा एडमिशन करवाने के लिए फॉर्म भरा जा रहा था। वहाँ मैंने एक

पादरी (फाधर) को देखा।

सहज ही धनप्रसादभाई से मैंने पूछा– *ये कौन हैं?*

उन्होंने कहा– *ये तुम्हें पढ़ाएँगे।* मैंने कहा– *मैं इस स्कूल में नहीं पढूँगा।*

जब धनप्रसादभाई ने खूब पूछा, तब मैंने कहा– *इन सफ़ेद गधों के पास मैं नहीं पढूँगा।*

ऐसा कह कर मैं बाहर ही निकल गया। यह तो बचपन की बात थी। पर, धर्मग्रंथों को पढ़ते हुए एक इम्प्रेशन ऐसी भी थी कि 'विवेकानंद' साधु जरूर थे। लेकिन, उनमें भारत की स्टॉन्च फेवर नज़र आती है। मेरे मन में भी तो एक्चयुअली यही है। फिर भी, मेरे मन में ऐसा भी कि 'साधु' को तो ऐसा नहीं होना चाहिए और अपने मन में यदि यही बात पकड़े रखी कि 'हिन्दुस्तान ही, भारत ही' – तो कहीं खोट न रह जाए। सो, एक बार मैंने काकाजी से पूछा था। जैसे महाराज का एक लक्षण बताया गया है कि घोड़े पर चढ़ते हुए एक रकाब में पाँव डाल कर दूसरे रकाब में पाँव डालें, इतने में वे जवाब दे देते। वैसे ही काकाजी से कोई भी, कैसा भी प्रश्न पूछें तो तुम्हारे दिमाग़ में फिट बैठ जाए, ऐसा जवाब एक मिनिट में दे देते।

यह बात मैं इसलिए कर रहा हूँ कि कई बार हमें भी ऐसा होता है। गुजराती में कहते हैं न कि दुःखे पेट और कूटे माथा। हम समझते नहीं, फिर भी हम सोच लेते हैं कि यह चीज़ बाधारूप होती है और यह सहायरूप है। सो, मैंने काकाजी से सारी बात विस्तार से की। काकाजी ने कहा– *तेरे बारे में ऐसा नहीं है।*

फिर मैंने कहा– *मैं हिन्दुस्तान ही क्यों यूँ पकड़े रहता हूँ?*

तब वे बोले– *देख, तू महाराज के समय से आ रहा है। महाराज ने अवतरण करने के लिए भारत पसंद किया। उस समय ऐसी कोई बात हो गई होगी और तू वहाँ होगा, तो तुझे देश के प्रति कॉर्नरींग नहीं, लेकिन महाराज के ऐसे शब्द भीतर में बैठ गए होंगे। तो, तू उसकी चिंता मत करना। ऐसा नहीं कि भारत ही पकड़ कर बैठा है। लेकिन, महाराज की बात को पकड़ा हुआ होगा। फिर भी, मैं तो हूँ ही।*

और... प्रवीणभाई खास दिल्ली मेरे लिए ही आए थे। **प्रवीणभाई** के बारे में मैंने देखा है **काकाजी द्वारा पेरिस के लिए पसंद किया गया वो व्यक्ति है।** तो जैसे गुजराती में कहते हैं कि हमें बहुत भाव नहीं खाना चाहिए– सो पेरिस आने का निश्चित कर लिया। फिर मन में ऐसा हुआ कि वहाँ तक जाना है, तो काकाजी-पप्पाजी लंदन काफी घूमे हैं, तो वो प्रसादी स्थल भी देख आएँ। यूँ, यहाँ आने का लाभ मिल गया। मुझे ख्याल ही नहीं था कि पप्पाजी यहाँ (फिलहाल लंदन– ज्योत का स्थल) स्थूल रूप से आए नहीं हैं। महाराज ने भी कैसा किया कि आख़िर-आख़िर में मुझे ख्याल आया कि हम 'ब्रह्मज्योति' भी पहली बार जाएँगे और 'ज्योत' में भी जाएँगे। तो, क्या ले जाएँ? तब मुझे आशिष ने कहा कि गुरुजी ऐसी मूर्ति ले जाएँ, तो सब खुश हो जाएँगे। बहनों को पप्पाजी की देना और भाइयों को साहेब की देना...

खूब विश्वास से मानना कि **पप्पाजी की यह मूर्ति जीवंत है... इसे महापूजा में रख कर पौना घंटा धुन की है।** बहनों को खुश कर दूँ या भाइयों को खुश कर दूँ– सिर्फ यही भावना नहीं है। **काकाजी हमेशा कहते थे कि हमारी मूर्ति जीवंत होनी चाहिए।** सो, **इस मूर्ति के पास ऐसी धुन और भजन किया है कि इस मूर्ति के पास सिर्फ तेरह मिनिट भी एकचित्त से कोई भजन करे, तो उसे भले कितनी ही प्रॉब्लम हो, उसका समाधान पप्पा को देना ही पड़े।**

हम भजन तो करते ही हैं, लेकिन काकाजी कहते थे कि तुम सब **'श्रद्धालु नास्तिक'** हो। यह विरोधाभासी कॉईन किया हुआ शब्द है। नास्तिकता और श्रद्धा दोनों चीज़ें एक साथ होती नहीं हैं। हम भजन करते हैं, नहीं करते ऐसा नहीं है। लेकिन मन की गहराई में ऐसा रहता है कि हमारी पुकार पहुँचती होगी या नहीं। कई बार ऐसा होता है कि फलां भजन करे, तो पहुँचती होगी...

हमें भीतर में ऐसा नास्तिकभाव रहता है और इसलिए हम तीव्रता से भजन नहीं करते। तीव्रता से, एकचित्त से भजन किया हो, तो भगवान को हमारा काम करना ही पड़े। पर, हमें यह भरोसा होना चाहिए...
हमें तो ऐसा रहता है कि भजन किया तो है, लेकिन भगवान सुनते होंगे या नहीं?
गुजराती में कहते हैं कि ऐसे भगवान को क्या धोकर निचोड़ना है?
यदि हमारी प्रार्थना सुनते ही न हों या उसकी हमें प्रतीति ही न होती हो; तो कमी उनकी नहीं, हमारी है।
सो, एकचित्त से – एक लय होकर भजन करें।
कई प्रसंग हमने सुने भी होते हैं। लेकिन उसके पीछे का रहस्य हमें पता नहीं होता।
एक बार मैंने मल्कानी के फार्म पर पप्पाजी से पूछा था – *हमारा कौन-सा मार्ग?*
मुझे ऐसी आदत थी और तब मैं बहुत पढ़ता भी था।
पप्पाजी ने कहा – ***हमारा प्रपत्ति मार्ग!***
मैंने पूछा – *यह ज्ञान मार्ग, भक्ति मार्ग, कर्म मार्ग वो क्या?*
उसमें से बात निकली और पप्पाजी ने कहा – *ज्ञान मार्ग का बड़े से बड़ा पाप – 'भेद दृष्टि'।*
भक्ति मार्ग का बड़े से बड़ा पाप – हम मूर्ति भूले – वह।
हम भी कहते हैं न कि एकांतिक के लिए मूर्ति भूले वो मरण है; यह बड़े से बड़ा पाप। और... कर्म मार्ग में बड़े से बड़ा पाप 'स्वधर्म का लोप'।
फिर पप्पा से पूछा – *भेददृष्टि के कारण पाप हो, उसका परिणाम क्या?*
पप्पा बोले – *तुम्हारा सात्त्विक अहंकार बढ़ता है, जो घटाना है।*
पप्पा बहुत शॉर्ट में जवाब देते थे। काका को पूछें तो सुबह से शाम तक घुटाते।
पप्पा शॉर्ट में हमें कह दें कि भेददृष्टि रखेंगे, तो तुम्हारे सात्त्विक अहं की पुष्टि होती रहेगी कि –
मैं मेरे स्वरूप को समझता हूँ।
और... मैंने पूछा – *मूर्ति भूलें तो?*
तब वे बोले – *जो मूर्ति भूल कर करते हैं, वे अपनी वृत्ति का पोषण करेंगे और मानेंगे कि मैं भक्तिरूप क्रिया करता हूँ...*
अब, जब हम थोड़ा भी चलने लगे हैं, तब इन सब बातों का ख्याल आता है कि हमारे जीवन में ऐसा सब बनता ही रहता है। इससे हमें सावधान रहना चाहिए...

...वजुभाई सेठ को बापा ने बात की थी। पप्पाजी ने भी यहाँ कई बार बात की होगी कि भरतजी ने हिरण के बच्चे को बचाया और मृगाकार में वृत्ति हो गई। फलस्वरूप हिरण का जन्म लेना पड़ा।

यह बात मुंबई – कपोलवाड़ी में की थी।

तब वजुभाई सेठ ने पूछा – *बापा, उसे तो हिरण का एक बच्चा चिपका हुआ था, हमारे अंदर तो ऐसे कितने हिरण भरे हुए हैं, तो हमारा तो क्या हाल होगा?*

वजुभाई, रमणिकभाई, ईश्वरभाई देसाई, वे सब ऐसा पूछते-करते थे।

बापा ने एकदम कह दिया – ***तुम्हें जो मिले हैं, वे भरतजी को नहीं मिले थे।***

ऐसे प्रपत्ति मार्ग में हम निहाल हो गए हैं।

पप्पाजी कहते – *ऐसे भयस्थानों से डरना नहीं, लेकिन हमें ध्यान तो रखना पड़े।*

हम उनके नहीं हैं, ऐसा भी नहीं है। काकाजी कहते – *तुम सब अर्जुन हो।*

मैंने तब उनसे पूछा – *काका, आप अर्जुन के प्लस पाईन्ट की बात करते हो या उसके डिवेल्यूएशन की बात करते हो।*

वे बोले – *तुम जैसे होगे, वैसे उसे समझोगे।*

फिर उसमें से बात हुई, वह सुन कर हम हँसेंगे जरूर, लेकिन हम ऐसा ही करते हैं।

गीता में श्लोक आता है कि अर्जुन कृष्ण से कहता है कि मुझे कुछ सूझ नहीं पड़ रही कि मैं क्या करूँ? मैं आपकी शरण में आया हूँ, आप मुझे बताओ कि मैं क्या करूँ; परंतु मैं लड़ाई नहीं करूँगा।

दो ही ऑप्शन्स थे कि यह करना या नहीं करना। विडंबना यह थी कि लड़ाई करनी या नहीं करनी। पर, अर्जुन ने क्या कहा कि – मैं आपका शिष्य हूँ, मुझे बताओ कि क्या करूँ, लेकिन मैं लड़ाई नहीं करूँगा।

भगवान दूसरे श्लोक में हँसे कि इसका तो कोई जवाब है ही नहीं।

काकाजी बोले – **तुम सब भी ऐसा ही करते हो।**

हमें बात कड़वी लगती है, लेकिन हमसे ऐसा ही होता है। एक ऐसी कक्षा आ जाती है कि जहाँ हम कहते हैं कि यह मुझसे नहीं होगा। समझने के बावजूद कि यह करेंगे तो काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी राजी होंगे। ऐसी तो कितनी गहन बातें हैं जिनके मुताबिक हम जीना नहीं चाहते।

अभी आप लोग बोले कि पप्पाजी आ गए! तब मैंने भी कहा कि पप्पाजी की पुश पिन वाली जो मूर्ति आई, उस रूप में पप्पाजी आ गए। मैं यह बिल्कुल स्पष्ट मानता हूँ कि –

कहाँ काकाजी, पप्पाजी और कहाँ हम? भले ही हम कितने बड़े गिने जाएँ! शायद उनसे बढ़ कर कार्य करते हुए भी दिखाई देते हों, लेकिन भूल से भी ऐसी ग़लतफ़हमी में न रहें कि काकाजी जैसे हो गए, पप्पाजी जैसे हो गए! वर्ना हमने इन पुरुषों का द्रोह किया कहा जाए।

काकाजी फर्क बताते हुए इस बात को समझाते थे। **'बड़े पुरुष' और 'अति बड़े पुरुष' में फर्क है।**

साधु का इसे द्रोह बताया कि ऐसे अतिशय बड़े पुरुष को अन्य साधु जैसा कहना या उससे न्यून समझना या उनके प्रति ओछापन रखना, वह साधु का द्रोह करने के बराबर है। काकाजी जैसे पुरुष, पप्पाजी जैसे पुरुष...! हम कैसे कहें कि ये पप्पाजी जैसे हो गए?

असली साधु का हम क्या द्रोह करेंगे? पप्पाजी का कोई वर्तन ऐसा नहीं था कि हम उन पर उंगली उठा सकें। काकाजी तो **'पाँच भेद'** में काम करते थे, सो उनके प्रति मन कुतर्क कर जाता था। पर, पप्पाजी के अंदर तो

ऐसी कोई चीज दिखाई नहीं देती। लेकिन, उन्हें और दूसरे साधु को बराबर कहना या उनकी तुलना उनके साथ करनी, वह भूल से भी हम न करें। **कहाँ ऐसे पुरुष जो मुफ़्त में अक्षरधाम दें।** हमारी ताक़त है? खूब अंतर्दृष्टि करके विचार करना। काकाजी, सरेआम कहते थे कि अध्यात्मज्ञान का दाता इस सोफे पर बैठा हुआ है। क्या हम कह पाएँगे? सो, **ऐसी बातों से खूब सावधान रहें।** किसी भी ऐसे अतिरेक में न जाएँ। उदासीनता में भी नहीं जाना कि हाय! मेरा क्या होगा? हमें समर्थ मिले हैं, यह भूलना नहीं है।

...काकाजी के स्वधाम जाने के बाद मैंने एक बार पप्पाजी से पूछा था – *मुझे किसका ध्यान करना चाहिए? हमारी तो प्रगट की उपासना है। काकाजी तो अब स्थूल रूप से हैं नहीं।*

पप्पाजी ने मुझे बिठा कर बहुत स्पष्ट कहा था – *देख, तुझे तो काका का ही ध्यान करना चाहिए। तुझे मेरा भी नहीं और हरिप्रसाद का भी नहीं। साथ में याद करना, वह बात अलग है। लेकिन, तेरी ध्यान की मूर्ति तो काका की ही होनी चाहिए।*

मैं फिर बीच में बोला – *पर, हमारी तो प्रगट की उपासना है!*

पप्पाजी एकदम बोले – *प्रगट की उपासना का ज्ञान मैं और काका ज़्यादा जाने या तू? तुझे इतना तो विश्वास है न कि पप्पा मुझे मिसगाईड नहीं करेंगे।*

मैंने कहा – *हाँ।*

फिर उन्होंने मुझे समझाया – *हमें प्रगट का संबंध एक बार होना चाहिए। उनके साथ हमारा संबंध दृढ़ होना चाहिए। फिर जरूरी नहीं कि वे हमेशा हमारे साथ ही रहें।*

श्लोक भी वे बोले – *एकोऽपि कृष्णस्य कृतः प्रणामी।*

बापा कहते – प्रत्यक्ष कृतः प्रणामी। प्रत्यक्ष को पहचान कर एक बार भी प्रणाम किया हो...

काकाजी हमें कहते थे कि हमने तो कितने प्रणाम किए, तब भी प्रतीति हुई नहीं – क्योंकि सही अर्थ में पहचाना नहीं, तत्त्व से पहचाना नहीं।

अब हमें और विशेष कुछ करना नहीं है। पप्पाजी कहते कि उनकी सत्ता आज भी चलती है। वे थे तब भी चलती थी, आज स्थूल रूप से नहीं हैं तब भी वैसी की वैसी चलती है। बस, उस **शक्ति को खींच-खींच कर अपने अंदर प्रगटाना है।** उसके लिए ये मूर्तियाँ सहायरूप होने वाली हैं। **इनमें जितना लय और लीन होंगे, उतनी अनुवृत्ति पकड़ी जाएगी।** इस प्रकार भजन करेंगे और हम वर्त नहीं पाते होंगे, तो वे इन्ट्रावीनस इंजेक्शन दे देकर जबरदस्ती वर्ताएँगे। जैसे मुझे नहीं आना था, पर नहीं यह अभिप्राय की भक्ति है इसलिए इस उत्सव में जाना ही है।

ये **प्रवीणभाई ने मुद्दे का बहुत बड़ा काम उठाया है।** उन्हें केवल काकाजी के साथ लगाव। पर, **उन्होंने समझा कि काकाजी और पप्पाजी इन दोनों का यह सिद्धांत है।** इतना छोटा मंडल, वहाँ कोई फाईनेन्शियल साउंड पोज़ीशन नहीं है। पर **देखना, उत्सव इतना अच्छा होगा कि हम सब 'वाह-वाह' करते हुए खुश होकर जाएँगे।** इसी रास्ते पर हम सब चलते रहें। बाकी कोई बात हमें समझनी बाकी रही नहीं... यही कहना है कि सब इकट्ठे होकर काकाजी और पप्पाजी की पहचान दें।

मुद्दे के काम की बात के बारे में तो **काकाजी** ने 1975 में लिखा था–

अब किसी भी जगह कोई भेददृष्टि न रहे, ऐसा मुद्दे का काम उठाना है। उसमें हे संतों, हे मुक्तों तुम साथ देना।

हम साथ देंगे तो वे हम पर कितना ढल जाएँगे? इसी तरह **पप्पाजी** ने कहा था–

सारा गुणातीत समाज एकाकार होकर वर्ते, वही मेरी मूर्ति है और बड़े जो हैं, वे स्वभावरहित वर्तें।

एकाकार होने के लिए स्वभावरहित होना ही पड़ेगा।

जब तक एकाकार होकर नहीं वर्त पाते, तब पक्का समझ लेना कि हम स्वभाव छोड़ नहीं पाए हैं।

ये दोनों चीजें वे दोनों भाई कराना चाहते थे, वह प्रवीण ने उठा लिया। मैं तो ख़ुश हो गया और सोचा कि यदि हम नहीं जाएँगे तो वह हमारा अलगाव कहा जाए। सो, भजन किया तो काकाजी ने जबरदस्ती भी भेज दिया... हमने भजन किया हो और थोड़ी भी रुचि रखी हो, तो काकाजी जैसे कहते कि *तुम एक कदम चलो, तो मैं सौ कदम चलूँगा।* पर, तुम्हें एक कदम तो चलना पड़े। हम एक कदम भी न चलें, तो फिर आशा भी नहीं रखनी चाहिए। ज़ीरो के साथ कितना भी मल्टीप्लाई करें, कुछ नहीं मिलेगा। एक के साथ जो मल्टीपीकेशन करेंगे, वो मिलने वाला है। तो, वही करते रहें। प्राप्ति भव्य - बड़ी है, उसकी न नहीं है; पर **यदि नहीं समझेंगे या उनकी बात को नहीं पकड़ेंगे,** तो खोट भी भयंकर है – वह भूलें नहीं। **सच्चाई से उनके होकर रहें वह काकाजी और पप्पाजी की पहचान दी कहा जाए।** बाकी भले कितने ही हम बड़े हों जाएँगे, उससे काकाजी और पप्पाजी की पहचान नहीं होगी।

एक और बात समझने जैसी है कि **काकाजी और पप्पाजी जनरल समाज के लिए थे ही नहीं। वे केवल हम जैसे मुक्तों के लिए ही थे।** काकाजी ने बापु को तो कह भी दिया था–

बापु, तू भले सोचता हो कि हम यहाँ आएँ और हमें रीसीव करने के लिए गाड़ियों की लंबी लाईन लग जाए... पर, ऐसा नहीं होगा।

देखो, एक इन्डीकेशन दे दिया था और हक़ीक़त में **भगवान का भव्य स्वरूप जब धरती पर आता है, वह अपने एकांतिकों और भक्तों को लाड़ लड़ाने के लिए ही आते हैं।** मैं कई बार कहता हूँ–

भागवत् की इतनी पारायण होती हैं, लाखों लोग इकट्ठे होते होंगे। पर, भागवत् में किसी जगह ऐसा लिखा है कि आज कृष्ण भगवान सभा इकट्ठी करके बैठे थे, उसमें पाँच - दस हज़ार लोग भी थे।

उस समय के पाँच हज़ार! वो भी नहीं थे और सारा उनका जीवन देखेंगे, तो पाँच पांडवों में समाप्त हो गया। इसी प्रकार हम बहुत गहराई से देखेंगे, तो **काकाजी और पप्पाजी भले खूब घूमे, लेकिन हम तक ही सीमित रहे। जब वे हम तक सीमित रहे, तो हम भी उन तक ही सीमित रहें। पप्पाजी जो कहते थे, वही उन्होंने करके बताया। पप्पाजी कहते थे कि मेरी दुनिया बहुत छोटी है। धाम, धामी और मुक्त! उन्हें उनके सिवा अन्य किसी का वज़ूद नहीं था। हमें भी उस रास्ते पर तो जाना ही पड़ेगा।** पर, कहते हैं कि सिंह का बच्चा, गीदड़ के साथ घूम-घूम कर उसके जैसा बोलता हो गया। वैसे हम भी वैभव-ऐश्वर्य (झाग-झमक) के बड़प्पन में न फंसें, **उसके लिए निरंतर भजन किया करें।** सहजानंदस्वामी महाराज की जय!

14 अगस्त, 2013 – 'बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव' सुबह की सभा, पेरिस

પૂ. સતીષભાઈ ચટવાણી (લંડન)

*(પેરિસ સમૈયામાં પૂ. સતીષભાઈનું વકતવ્ય પ.પૂ. ગુરૂજીને ખૂબ જ માર્મિક અને પ્રેરણાદાયી લાગ્યું. દીવાળી-નૂતન વર્ષના મંગળકારી દિવસોમાં પ્રગટની નિષ્ઠાવાળા આવા મુકતની હૃદય વિવક્ષાથી **માયાથી પરની એક સૂઝ**ને પામીએ, એ હેતુસર એને ભગવત્ કૃપાના આ અંકમાં સમાવિષ્ટ કર્યું છે.)*

...સર્વપ્રથમ તો આપણે પેરિસ મંડળને સેલ્યૂટ કરીને ખૂબ ખૂબ તાળિઓથી વધાવીએ. હું એટલા માટે કહું છું કે—હું આવીને એમ નહીં કહું કે પ્રભુના બળે કેટલું મોટું કામ થઈ શકે છે. હું કાન પકડીને જ કહું છું કે જ્યારે પેરિસના સમૈયાની વાત થઈ, ત્યારે આપણે ખરેખર બુદ્ધિ લગાડીએ, તો આપણને આ આખો કાર્યક્રમ અશક્ય લાગે. છતાં આપણી આખી સાધના બુદ્ધિથી પર જવાની છે. ગઈ કાલે **ગુરૂજીએ વાત કરી કે માયાથી પર જઈ અને ભગવાનના અર્થે, ભગવાનના બળે, મોસ્ટ ઇમ્પોર્ટન્ટ—આપણા ગુરૂમાં રહી, એના માટે—ઠાકુરજી માટે શું નહીં થઈ શકે, એનું ખરેખર આ સાક્ષાત્ દર્શન છે.**

મને ખૂબ આનંદ થયો—અહિંયા આવવાનો. કારણ કે આટલા નાના મંડળે! એટલે **સાહેબ ઘણી વખતે કહે છે, તમે કેટલા હજારો છો—એ અગત્યનું નથી. પણ, તમે કેટલા ખરેખર ગુરૂમય થઈ એમનું કાર્ય ઉપાડવા તૈયાર છો—એ ખરેખર આ પેરિસ મંડળે આ સમૈયો કરી, અમને સહુને એનું દર્શન કરાવ્યું.** જ્યારે સમૈયામાં આવવાની વાત થઈ ત્યારે મને ઘણાંએ કહ્યું કે સત્સંગમાં બહુ સમયથી ન હોવાથી તમને કાકાજી-પપ્પાજીનો કાંઈ ખ્યાલ નહીં હોય. મેં કહ્યું—

આપણે એમની સો વરસની 'લૅગેસી' સેલિબ્રેટ કરવા જઈએ છીએ. સો વરસની લૅગેસી એટલે કે આજે એમનું કાર્ય ચાલુ રહ્યું છે. એમનું કાર્ય જેમના થ્રૂ ચાલુ રહ્યું છે, એ સમૈયો તો અવશ્ય- જો આપણા ગુરૂની આજ્ઞા હોય, તો એટેન્ડ કરવો જોઈએ. બે દિવસથી આપણે **કાકાજી ને પપ્પાજી**ના મહિમાની અદ્‌ભુત વાતો સાંભળી અને **ત્રણ દિવસ નહીં, કદાચ ત્રણસો દિવસ પણ આ સભા ચાલે, તો એમના જીવનમાં જે ખરેખર ભગવાન સ્વામિનારાયણ ને ગુણાતીત પરંપરા માટે જે એમણે સેવાઓ કરી છે, આપણે ગમે તેટલા પ્રવચનો રાખીએ, પણ એમણે જે સેવાઓ કરી છે, એ જસ્ટિસ નહીં કરી શકીએ.** છતાં, આપણા સહુની ગુરૂભકિત અદા કરવા માટે, આપણને ગુરૂ ને ભગવાન જે પ્રેરણા આપે, એમની વાત તો કરવી જોઈએ.

જેમ બે દિવસથી વાત થાય છે એમ, **કાકાજીએ ગુણાતીત સમાજનું સર્જન કર્યું.** આપણે આજે ભેગા થયા છીએ, એ ખરેખર દેખાડે છે. નહીં કે, આપણને આગ્રહ તો બહુ કરે જ, સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયની એવી સિસ્ટમ છે કે આપણા ગુરૂ ને ઠાકોરજીને રાજી કરવા સમૈયામાં ભક્તોને ભેગા

કરવા આપણે આગ્રહ કરીએ. પણ, આટલાં બધાં ભેગા થયા છે, એ દેખાડે છે કે ગુણાતીત સમાજનું જે ફાઉન્ડેશન સ્થાપ્યું – **બિલ્ડિંગમાં ફાઉન્ડેશન કરીએ, પછી એના ઉપર માળ ચડાવવા બહુ સહેલા છે. પણ, ફાઉન્ડેશન કરવું ને – કાકાજી ને પપ્પાજીએ જે ફાઉન્ડેશન કર્યું એની જે બે દિવસથી વાતો થાય છે ને આપણે સાંભળી, એ દેખાડે છે કે એમણે કેટલું મોટું કાર્ય કર્યું!**

આ ગુણાતીત સમાજ – જેને ગુણાતીત સમાજ કહેવામાં આવે છે, એ ગુણાતીત સમાજનું ફાઉન્ડેશન કાકાજીએ કર્યું. શું કરવા એનું નામ ગુણાતીત સમાજ આપ્યું ? ગુણાતીતનો જે સંકલ્પ હતો કે સહુને ગુણાતીત અવસ્થા પમાડવી – એ સંકલ્પ સાકાર થાય, એના માટે આપણે સહુ ભેગા થયા છીએ. ભગવાનને પામવા, ભગવાનને રાખવા – એ કાર્ય, જેની શુરૂઆત કાકાજીએ કરી, એ કાર્ય વહેતું રાખવું, એ આ સહુ ગુણાતીત પુરૂષો ખરેખર પોતાના જીવન દ્વારા એક કે બીજી રીતે કાકાજી ને પપ્પાજીનું કાર્ય ચાલુ રાખે છે.

કાકાજીની – પપ્પાજીની જે વાત કરી, એ ખરેખર **હું બે દિવસથી અહિંયા બેઠો છું, તો મને થાય છે કે કાકાજી-પપ્પાજીએ એવું કયું કાર્ય કર્યું કે જેની ટૂંક સમયમાં આપણે વાતો કરી શકીએ.** દિલીપભાઈએ એમની ગોષ્ઠિમાં વિમુખ થવાની ઘણી વાત કરી. લૌકિક દૃષ્ટિએ જોઈએ તો ખરેખર કાકાજી-પપ્પાજી, સંતો અને અનુપમ મિશનના વ્રતધારી ભાઈઓને વિમુખ કરવામાં આવ્યા'તા કે વિમુખ થયા, એની ટૅક્નીકલ ડેફીનેશનમાં આપણે નહીં જઈએ. પણ, **કાકાજીએ** ખરેખર એના જીવન દ્વારા – એણે **આપણને દર્શન કરાવ્યું કે વિમુખનો ખરેખર આધ્યાત્મિક અર્થ શું થાય ?** કોઈ તમને કાગળ સાઈન કરી નોટિસ મોકલે કે કોઈ નોટિસ બોર્ડ ઉપર નોટિસ મોકલે, એનાથી તમે કાંઈ વિમુખ થતા નથી. **કાકાજીએ ભલે બેપ્સના મંદિરો છોડી દીધાં, પણ એમના જીવન દ્વારા એમણે દર્શન કરાવ્યું કે આધ્યાત્મિક રીતે તમે ઠાકોરજી કે ગુરૂથી વિમુખ થાઓ – જો તમે એના સંબંધવાળા ભક્તોના અભાવ, ભાવફેર, આઘા-પાછીમાં પડ્યા, તો જ તમે ખરા અર્થમાં વિમુખ થયા. યોગીજી મહારાજ ત્યારે અને અત્યારે પણ આપણી જોડે એટલા માટે છે કે કાકા, પપ્પા, સ્વામી અને સાહેબને વિમુખ ન્હોતા કર્યા.** એ લોકો કોઈ ચિઠ્ઠી ઉપર કાગળ લખવાથી વિમુખ નથી થતાં. પણ, એના કોઈ સંબંધવાળાનો રંચમાત્ર – આપણે ગઈ કાલે કલ્ચરલ પ્રોગ્રામ જોયો. એમાં કાકાજીએ પ્રમુખસ્વામી, મહંતસ્વામી - એમનો સમાગમ કરજો અને *'જો એલેગ્ઝેન્ડર હૉલમાં એ હોય, તો મારે એમને મળવું છે'* – એ ખરેખર દેખાડે છે કે કોઈ વિમુખ થયા જ નથી. બીજું, **તમે કેવી રીતે વિમુખ થાઓ ? જો, તમે ભગવાનનું કર્તાહર્તાપણું ચૂકી જાઓ.** ભગવાનનું કર્તાહર્તાપણું – સાહેબ ઘણી વખત વાત કરે છે કે ચૂકવાની તો વાત જ નથી. પણ, પળેપળ કાકાજી ને પપ્પાજીએ આ આખો પ્રસંગ બન્યો અને પછી એમના સમગ્ર જીવનમાં જે પ્રસંગ બન્યા, એ બધાંમાં એમણે ભગવાનનું કર્તાહર્તાપણું સ્વીકાર કર્યું. **પ્રગટ ઉપાસનાની વિશેષતા કે આજે એમની લૅગસીને એટલા માટે સંભારવી પડે કે એમણે વાતો કરી – એવું જીવી ગયા. પણ, એ વાતો કરીને, જીવીને પછી જો એ કાર્ય કન્ટીન્યૂ ન થાય – તો એ ખરેખર લૅગસી ન કહેવાય.**

આજે આપણે જોઈએ છીએ કે આ બધાં સ્વરૂપોએ વિમુખની ડેફીનેશન રીડિફાઈન કરી. સાહેબ, સ્વામિજી વારે ઘડીએ વાત કરે છે કે યોગીજી મહારાજ આજે ય અમારી જોડે છે અને એના સંબંધવાળામાં – ત્યારે જ નહીં, ત્યારથી અત્યાર સુધી કોઈના માટે અભાવ નથી થયો. 'આવું કેમ બન્યું ?' – એવો કોઈ દિવસ અસ્વીકાર નથી થયો. એટલા માટે **કાકાજીની આ બહુ મોટી વિશેષતા છે કે વિમુખ ચૅપ્ટરને અને વિમુખ શબ્દને રીડિફાઈન કર્યો.**

બીજું ઘણાં વરસોથી વાત થતી'તી કે – કાકાજી શાસ્ત્રીજી મહારાજનું ખરેખર કૃપાપાત્ર છે, હતાં. **કૃપાપાત્ર ક્યારે કહેવાઓ કે જ્યારે એમના તરફ સિન્સિયારીટી દેખાડી, એમનું કાર્ય ચાલુ રાખો.** અને જે માટે – આપણા માટે એણે વડતાલ મંદિર છોડી દીધું ; આપણે કેટલી વખત વાત કરીએ છીએ કે શાસ્ત્રીજી મહારાજે જો વડતાલ મંદિર ન છોડયું હોત તો ત્યાં એમની સોનાની મૂર્તિઓ પધરાવત. શાસ્ત્રીજી મહારાજે વડતાલ મંદિર ન છોડયું હોત તો સાહેબ પોતાની વાતોમાં કહે છે કે – યોગીજી મહારાજે એમનો હાથ પકડીને કહ્યું કે વડતાલ મંદિરમાં એ પુજાતા હોત. **કાકાજીને કોટિ-કોટિ ધન્યવાદ કે આ વસ્તુનો એને ખ્યાલ હતો કે આ સામાન્ય પુરૂષ નથી.** જો એમણે વડતાલ મંદિર ન છોડયું હોત, તો એ પુજાત. સોનાની મૂર્તિની વાત તો જવા દો, પણ ત્યાં એ પૂજાત. એ વાતને એણે પકડી લીધી અને **ઉપાસનાની ખરેખર ડેફીનેશન એમણે સમાજ પાસે સાકાર મૂકી કે ગુણાતીતાનંદસ્વામી મૂળ અક્ષર તો હતાં જ. પણ એમની મૂર્તિ શાસ્ત્રીજી મહારાજે સિમ્બૉલિક અર્થે પધરાવી.** એવું ભગવાનનું તત્ત્વ આજે પ્રગટ ને પ્રત્યક્ષ અહિંયા છે – એ વાત કરી ; ને પછી કેટલું બધું ઑપૉઝીશન થયેલું ? આજે આપણે કેટલી સહજતાથી કહીએ છીએ કે આ બધાં અક્ષરપુરૂષોત્તમ મહારાજના સ્વરૂપો છે. પણ, એ ટાઈમમાં – ૧૯૫૨માં, યોગીજી મહારાજ બધાંને ગમતા'તા કારણ કે એ બધાંનું બહુ ધ્યાન રાખતા, બધાંને ખૂબ હેત કરતાં. પણ, જ્યારે વાત કરી જે અક્ષરધામમાં છે એ જ અહિંયા વિરાજમાન છે, ત્યારે આ વાત કોઈના ગળે ઉતરતી ન્હોતી. આપણે ખરેખર એમને ધન્યવાદ દેવા છે. **ઉપાસનાની વાત આપણે ખૂબ કરીએ છીએ** કે આપણને આવા ભગવાનના તત્ત્વ સાથે હેત થઈ જાય' તો આપણું જીવન બદલાઈ જશે. **પણ, ઇ ભગવાનનું તત્વ કોણ ? અને આ ધરતી પર કોણ છે ? એ વાત ખરેખર કાકાજીએ કરી** અને એવા સંતો આ ધરતી ઉપર એવું કાર્ય ચાલુ રાખશે. એમાં યોગીજી મહારાજને પચાસ સંતો બનાવવા માટે – અત્યારે સંતોની વેઈટિંગ લિસ્ટ હોય છે. પણ, ત્યારે વેઈટિંગ લિસ્ટ ન્હોતું. એક દિવસ પાંચ એગ્રી કરે, બીજા દિવસે છ ઓછા થઈ જાય; એક દિવસ દસ હા કરે, બીજા દિવસે બાર ઓછા થઈ જાય. એ પચાસ સાધુઓને ભેગા કરવા – શું કરવા ભેગા કરવા ? બૅપ્સની જય જયકાર થાય એટલા માટે નહીં, પણ શાસ્ત્રીજી મહારાજનું કાર્ય ચાલુ રાખવા. **કાકાજીએ ખરેખર બહુ મોટો દાખડો કર્યો.** અને **એવા પ્રગટ ને પ્રત્યક્ષ પુરૂષ દ્વારા આ ધરતી પર અક્ષરપુરૂષોત્તમ મહારાજ સાકાર છે, એનું પણ એમણે દર્શન કરાવ્યું.** આજે આપણે બહુ સહજતાથી વાતો કરીએ છીએ, પણ જેણે એનું ડીપ ફાઉન્ડેશન કર્યું અને એની લૅગેસી – ફરી હું તમને કહું છું કે એ લૅગેસી ચાલુ રાખવા માટે આજે આ બધાં ગુણાતીત પુરૂષો ખૂબ દાખડા કરે છે.

સાહેબે – તમને ખ્યાલ નહીં હોય, પણ કન્ટ્રી-કન્ટ્રીમાં આજે અક્ષરપુરૂષોત્તમ ઉપાસનાનું નવ વાર કથામંગલમ્ થયું – એ સાહેબનો જય જયકાર થાય એટલા માટે ? નહીં. પણ, **કાકાજીએ જે શાસ્ત્રીજી મહારાજની એ વાત પકડી લીધી, એટલે એનું કૃપાપાત્ર કહીએ છીએ.** એનું કાર્ય તમે ચાલુ રાખો એ તમારા ગુરૂ તરફની (તમારી) વફાદારી કહેવાય. શાસ્ત્રીજી મહારાજના કૃપાપાત્ર હોવા છતાં, એ ને એ તત્ત્વ યોગીજી મહારાજમાં છે, ઇ કાકાજી ને પપ્પાજીએ પોતાના જીવન દ્વારા આપણને શીખવાડ્યું કે આ મંગલ તત્ત્વ ધરતી પરથી ક્યારે ય જતું નથી – જે શાસ્ત્રીજી મહારાજે ભગતજી મહારાજના વખતે વાત કરી. એનું દર્શન – આપણને ખરેખર કાકાજીએ વાત કરી.

વાત પૂરી કરૂં એ પહેલાં **એમની જે સર્વદેશી – એમની જે રીત હતી, એમનો જે ભાવ હતો, એની લૅગેસીનું પણ આજે દર્શન કરીએ છીએ.** આપણે ગઈ કાલે પ્લેમાં જોયું કે **બીજાં બધાં સ્વરૂપોને ખૂબ આગળ રાખતા.** તમે કાકાજીના મોઢે જુઓ – *'આ હાર અમેરિકા હરિપ્રસાદસ્વામીને ચઢાવવા માટે લઈ જાઉં છું.'* એમણે બીજાં સ્વરૂપો વિષે વિધવિધ પ્રકારની વાત કરી. **કાકાજીનો આ સહજ સ્વભાવ હતો.**

અને એક બહુ મોટી વાત કરી – **જે મને ઘણી વખત લાગે છે, માફ કરજો કે આપણા ગુણાતીત સમાજમાં ભૂલી જઈએ છીએ.** ઘણી વાર આપણને ઉપાસનાનું ભાન નથી હોતું, છતાં કોણ પ્રગટ પુરૂષ ને કોણ પ્રત્યક્ષ પુરૂષ છે, એની લપચપમાં આપણે પડી જઈએ છીએ ઇ દેખાડે છે કે આપણી કઈ કક્ષાની અજ્ઞાનતા છે. **આપણે ખરેખર જો કાકાજીની લૅગેસી ચાલુ રાખવી હોય, તો કાકાજી શું કહેવા માગતા'તા (એ સમજવું પડે). આ ધરતી પર એક સમયે એક ગુણાતીત પુરૂષ છે, એ વાત ગુણાતીત પરંપરામાં બંધબેસતી નથી. કેટલા ગુણાતીત પુરૂષ છે, એ ઈમ્પોર્ટન્ટ નથી. પણ, તમને કોની જોડે હેત છે – એનાથી પણ વધારે, તમે કોની આજ્ઞામાં રહો છો.** શાંતિભાઈ ને અશ્વિનભાઈએ શિબિર માટે આ વરસે એક હૅડિંગ આપ્યું છે – 'સંત આજ્ઞા સોપાન'! **કાકાજીએ એમના જીવન દ્વારા આપણને સહુને શિખવાડ્યું કે અક્ષરપુરૂષોત્તમ ઉપાસનાનું ખરેખર રહસ્ય આ છે.** તમે ભગવાનને સર્વોપરિ, સર્વ કર્તાહર્તા, હિતકારી, હેતકારી, મંગલકારી – ઇ બધું માનો; પણ, એના પછીનું સ્ટેપ છે કે તમે એવા ગુરૂની આજ્ઞામાં – તમારૂં સમર્પણ ન થાય, તમે તમારા સમગ્ર તંત્રને સરન્ડર ન કરો, ત્યાં સુધી તમારી સાધનાની શરૂઆત જ નથી થતી.

કાકાજી ને પપ્પાજીએ એમના જીવન દ્વારા ખરેખર શિખવાડ્યું કે તમને હેત ગમે તેની સાથે થાય – આમાંથી ગમે તેની સાથે હેત હોય – આપણે બધાં માટે પૂજ્યભાવ તો રાખવાનો જ; પણ, અગત્યની વાત એ છે કે આમાંથી તમને કોની સાથે હેત છે. તમે કોની આજ્ઞા સંપૂર્ણ પાળવા તૈયાર છો. કારણ કે જ્યાં સુધી આજ્ઞા નહીં પાળો, ત્યાં સુધી તમે અક્ષરધામના સુખ-શાંતિ – દિલીપભાઈએ સરસ વાત કરી કે અક્ષરધામના સુખ-શાંતિ ભોગવવા માટે – આપણા પરિવર્તન માટે આપણે ગુરૂની પ્રસન્નતા કમાવવી, ગુરૂની પ્રસન્નતા કમાવા માટે એમની વાત માનવી પડે. **આ વાત ખરેખર કાકાજીએ એમના જીવન દ્વારા સાકાર કરી ને સર્વદેશીયતાનો જે ભાવ છે – ઇ લૅગેસી પણ કન્ટીન્યૂ થઈ છે.**

આજે આપણે જોઈએ છીએ કે **'દરેક સ્વરૂપોને આગળ રાખવા' – એ વાત કાકાજી બહુ કરતાં.** મને **બહુ ગૌરવ છે કે સાહેબની આજ્ઞાથી** તમે **લંડન** આવો છો ને **અનુપમ મિશનમાં હિંમતસ્વામી કાકાનું ઇ કાર્ય ચાલુ રાખે છે.** કેવી રીતના ? હું તમને હમણાંનો જ એગ્ઝામ્પલ આપું. હમણાં શિકાગો મંડળ આવ્યું. શિકાગોનું મંડળ ગયું, તો ગુરૂજીનું મંડળ આવ્યું. એ મંડળ ગયું; હજી તો નથી ગયા, હતાં – ત્યાં તો સાહેબ આવ્યા. હું તો દર્શન કરે રાખું છું. સ્વામિજી આવશે હમણાં. **હિંમતસ્વામી**ને હું એટલે સેલ્યૂટ કરૂં છું. લંડનના છે એટલે નહીં, પણ **કાકાજીનું કાર્ય એમણે ચાલુ રાખ્યું.** કેવી રીતના ચાલુ રાખ્યું ? દિનકરભાઈ, ગુરૂજી – આ બધાંને પૂછજો તમે. સ્વામિજી તો મને ફૅક્સમાં લખે છે કે મને હિંમતસ્વામી બહુ ગમે... **કેમ હિંમતસ્વામી ગમે ?** જ્યારે આવે છે, ત્યારે એનું બહુ ધ્યાન રાખે છે એટલે ? નહીં, **એણે કાકાજીની વાત પકડી લીધી.** આજે તમે અનુપમ મિશન લંડનમાં દિનકરભાઈનું નામ લઈને આવો, ગુરૂજીનું નામ લઈને આવો, કોઈનું પણ નામ લઈને આવો. **એને સાહેબ જોડે હેત છે, સાહેબની આજ્ઞામાં રહે છે, પણ સાહેબને શું ગમે છે – કાકાજીને શું ગમતું'તું ઇ વાત એમણે પકડી લીધી છે.** મેં ગુરૂજીને પૂછયું કે તમે પહેલી વાર ઓવરસીઝ આવ્યા છો, તો ટ્રિપની શરૂઆત કેવી ગઈ ? બહુ સારી, હું પાછો આવું કદાચ. 'કદાચ' શબ્દ તો જ્યાં સુધીમાં આ ટ્રિપમાંથી જાશે, ત્યાં સુધી ઓગળી ગયો હશે. એ આવશે જ, કેમ ? હિંમતસ્વામીએ ખરેખર – અક્ષરપુરૂષોત્તમ મહારાજનું સ્વરૂપ છે – એની સેવા કરી લેવાથી મારા ગુરૂ રાજી થશે, એ કાકાજીનું સૂત્ર હતું. એટલે હું લૅગેસી પૉઈન્ટની વાત કરૂં છું કે આ સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાય પ્રોગ્રેસિવ છે.

સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયમાં આવ્યા, ઇ પહેલાં મને સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાય માટે બહુ અરૂચિ હતી કે આ લોકોથી એક માઇલ નજીક નહીં આવવાનું. એક માઇલ બી જો નજીક આવશો, તો વાવાઝોડામાં ક્યાં અટવાઈ જશો, એ ખબર નહીં પડે. એ વાત ટાળવા માટે **કાકાજીએ દેખાડ્યું કે તમારે ભગવા કપડા પહેરવાની જરૂર નથી. તમે અંદરથી સાધુ થાવ. તમે ગુરૂમય થાવ. ભગવાનનું તત્ત્વ ખરેખર ધરતી પર પ્રગટ છે – એનો સ્વીકાર કરો – એવું અદ્‌ભુત કામ કાકાજી-પપ્પાજીએ કર્યું.**

એટલા માટે આપણે પેરિસ આવ્યા છીએ. એટલા માટે એની લૅગેસી કન્ટીન્યૂ કરવાની છે અને સ્વામિજીએ ગઈ કાલે જે વાત કરી કે કોઈ પણ ભોગે, કોઈ પણ સંજોગોમાં એમને જે ગમતું'તુ એ કરવું છે. કરે તો છે જ. મેં તમને કેટલા બધાં એગ્ઝામ્પલ આપ્યા. એમનું કાર્ય ચાલુ છે – અક્ષરપુરૂષોત્તમ ઉપાસના, 'ભગવાનના ભક્તો બહુ મોટા છે, સાધુઓ બહુ મોટા છે' – અને ગુરૂને રાજી કરવા માટે આ કાર્ય કરવું પડે. એટલે આજના શુભ મંગળકારી દિવસે આ પ્રગટ ને પ્રત્યક્ષ સ્વરૂપોના ચરણોમાં પ્રાર્થના છે કે **આપણે એના (લૅગેસીના) સો વરસ ઊજવી રહ્યા છીએ.** આપણે ખરેખર એમના સો વરસ ઊજવવા હોય, તો એમનું કાર્ય કેવી રીતના ચાલુ રાખી શકીએ ? અને ચાલુ રાખતાં-રાખતાં ફરી ગુણાતીત સમાજના ડેફિનેશન પર આવી જાઓ – આપણા સહુમાં ગુણાતીતભાવ પ્રગટે એવી પ્રાર્થના, જય સ્વામિનારાયણ !

(शेष अगले अंक में...)

✡✡✡

ब्रह्मस्वरूपिणी 'बेन' को श्रद्धांजलि...

गुरुवर्य योगीजी महाराज के अंतर के अभिप्राय के मुताबिक ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी की बंधुजोड़ी ने बहनों के भगवान भजने हेतु क्रांतिकारी कदम उठाया। उसमें ब्रह्मस्वरूपिणी सोनाबा ने अपनी पुत्री प.पू. ज्योति बहन, प.पू. तारा बहन के साथ से सर्वप्रथम पहल की। धीरे-धीरे अन्य बहनें भी भगवान भजने के लिए तत्पर हुईं और 1966 में **'गुणातीत ज्योत'** की स्थापना हुई।

पहली जून – ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी को हुई स्वरूपानुभूति के मंगलकारी दिन सर्वप्रथम **51 बहनों** ने भागवती दीक्षा धारण की। तब अफ्रीका निवासी महामुक्तात्मा - संकल्पसिद्ध **प.पू. बेन** (प.पू. शांताबेन पोपट) ने भी भगवा चोला धारण किया। ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी के युगकार्य में साथ देने के लिए ब्रह्मस्वरूपिणी सोनाबा के साथ 'गुणातीत ज्योत' में रहते हुए पूरे गुणातीत समाज को अपने दिव्य वात्सल्य से भिगो दिया। अपने आश्रितों को मातृत्व से भरपूर अनेक स्मृतियाँ देकर, निरपेक्ष प्रेम लुटा कर **ब्रह्मस्वरूपिणी बेन** ने मंगलवार दिनाँक **6 अगस्त 2013** को अक्षरधामगमन किया।

जिसका मंदिर तैयार ही था और उसमें केवल प्रभु की मूर्ति का स्थापन करना शेष था, अनादि की ऐसी प.पू. बेन का प्राकट्य सौराष्ट्र की धरती पर सरदारगढ़ में 9 जुलाई 1914 को हुआ था। बचपन से ही उन्हें भगवान से मिलने की तीव्र उत्कंठा थी। सांसारिक रीति अनुसार 13 वर्ष की छोटी आयु में विवाह करके अफ्रीका गईं। नौ वर्ष के बाद पति के अवसान के कारण वैवाहिक जीवन समाप्त हो गया। लेकिन, घर और बच्चों के प्रति अपनी जिम्मेदारी पूरी करने के साथ-साथ प्रभुदर्शन की तीव्र अभिलाषा से भक्तियोग का आरंभ किया। उनकी भक्ति से अनेक मुमुक्षु बहनों को शांति मिलती और उनके प्रति खिंचाव होता।

भक्तिरस में डूबी प.पू. बेन ने भगवान श्री कृष्ण एवं श्री महादेव की अतिशय आराधना करके उनकी साक्षात् अनुभूति की। **अफ्रीका के** भक्तराज **प.भ. मगनबापा** के संपर्क में आने पर, उनके द्वारा की गई **'प्रत्यक्ष प्रभु'** की बलभरी बातें प.पू. बेन के जीव में स्पर्श कर गईं और... **'परोक्ष'** की इतनी भक्ति के फलस्वरूप मानो भगवान स्वामिनारायण को अखंड धारी विभूति ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज के प्रति प.पू. बेन को दृढ़ निष्ठा हुई। ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज के स्वधामगमन के पश्चात् **ब्रह्मस्वरूप काकाजी** के वचन और योग से **ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज** में भी ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज जैसी ही प्रतीति हुई। प.पू. बेन की अजोड़ भक्ति और प्रभु प्राप्ति की मस्ती देख कर जिन – जिनको उनके प्रति असाधारण लगाव

हुआ, वे सभी सहज ही ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज, ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी से जुड़ते गए।

प.पू. बेन ने जींजा (अफ्रीका) में अपने दिव्य जीवन के प्रभाव से भक्तों के साथ सहकार से मंदिर बनवाया। उनकी ऐसी गरज देख कर ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज ने उन्हें ताड़देव जाने की आज्ञा की। ताड़देव में ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी के दर्शन, महिमा की बातें सुन कर उन्हें भीतर में शांति का अनुभव हुआ और 1963 में **ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी** के प्रति निष्ठा दृढ़ हो गई। इसी वर्ष में गणेशपुरी-मुंबई की एक शिविर में ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी ने बहनों के भगवान भजने और भजवाने का संकल्प करवाया; तब प.पू. बा, प.पू. बेन, प.पू. काशीबा को बहनों की जिम्मेदारी दी और भजन करने की आज्ञा दी... 1966 में प.पू. बेन अफ्रीका से विद्यानगर गुणातीत ज्योत में स्थायी रूप से रहने आ गईं। अंनत सामर्थ्य से युक्त प.पू. बेन को ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी ने ब्रह्मसूत्र दिया–

ज्योति, तारा, हंसा, देवी को बड़ा मानना।

ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी के इस वचन को उन्होंने जीवन का आधार मान कर, अपनी मान्यता–सत्यों को ठुकरा कर 'सभी में महाराज आप ही हो' इस सूत्र को नज़र के समक्ष रखा... ऐसी गुणातीत स्वरूप प.पू. बेन ने आध्यात्मिक क्षेत्र में नारी उत्थान के कार्य में योगदान देकर श्रीजी महाराज के वचन, ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज के संकल्प और उसे साकार करने वाले ब्रह्मस्वरूप काकाजी, ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी और ब्रह्मस्वरूपिणी बा के प्रति अद्भुत भक्ति अदा की।

1972 के बाद अफ्रीका से निकल कर इंग्लैन्ड में स्थायी रूप से रहने आए भक्तों का प.पू. बेन ने ऐसा जतन किया कि ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी के प्रति समर्पित निष्ठावान समाज का सर्जन हो गया। इससे भी अधिक, ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी को अपना संपूर्ण जीवन अर्पण करके, लंदन–गुणातीत ज्योत में भगवान भजती बहनें अपने भजन-प्रार्थना से विषयों से भरपूर लंदन की धरती को पावन कर रही हैं।

प.पू. बेन के अंतिम दर्शन करने के लिए प.पू. दीदी विद्यानगर गई थीं। वहाँ प.पू. बेन का एक खूब मार्मिक व प्रेरणादायी प्रसंग उन्हें ज्ञात हुआ–

एक बार 'गुणातीत ज्योत' में बहनें आपस में सहज ही एक - दूसरे से पूछ रहीं थीं कि तुम्हें कौन-सी सब्जी पसंद नहीं है ? सभी ने अपनी-अपनी नापसंद सब्जियाँ बताईं। जब प.पू. बेन से पूछा गया कि उन्हें कौन-सी सब्जी पसंद नहीं है, तो उन्होंने खूब सहजता से जवाब दिया–

एक-दूसरे के अभाव-अमहिमा की बातें मुझे तनिक भी पसंद नहीं, बाकी सब कुछ पसंद है।

ऐसे प्रभुधारक संतों ने तो समय-समय पर किसी न किसी रूप में हमें सही मार्गदर्शन दिया ही है कि इस रास्ते मत जाना, वहाँ गड्डा है। लेकिन, हम अपने नशे और नादानी में उसी डगर पर चल पड़ते हैं और समय गँवाते हैं। सो, प.पू. बेन के उपरोक्त प्रसंग की गहराई समझें, वही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि कही जाए!!

✡✡✡

अन्नकूटोत्सव

दिनाँक 4 नवंबर 2013, सोमवार की सुबह

गुणातीत कुनबे का वार्षिक स्नेहमिलन – सुबह 9:00 से 11:30

अन्नकूट आरती – दोपहर 12:30 बजे

सपरिवार ईष्ट मित्रमंडल सहित पधारने आपको हार्दिक निमंत्रण है।

स्थान- श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर
'ताड़देव', काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अशोकविहार -III , दिल्ली - 52

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	13.10.'13,	रविवार	—	**दशहरा, प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का पार्षदी दीक्षा दिन**
(2)	दि.	15.10.'13,	मंगलवार	—	एकादशी, व्रत
(3)	**दि.**	**18.10.'13,**	**शुक्रवार**	—	**शरदपूर्णिमा, मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामिजी का प्राकट्य दिन** **प्रगट ब्रह्मस्वरुप प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का भागवती दीक्षा दिन** **प.पू. दिनकरभाई की प्राकट्य तिथि**
(4)	दि.	20.10.'13,	रविवार	—	ब्रह्मस्वरुप जागास्वामिजी की जन्मजयंती
(5)	दि.	30.10.'13,	बुधवार	—	एकादशी, व्रत
(6)	दि.	31.10.'13,	गुरुवार	—	वाघबारस
(7)	**दि.**	**1.11.'13,**	**शुक्रवार**	—	**धनतेरस (अशोकविहार मंदिर में 'धनपूजा'– सायं 7:00 से 8:30)**
(8)	दि.	2.11.'13,	शनिवार	—	अक्षर चौदस
(9)	**दि.**	**3.11.'13,**	**रविवार**	—	**दीवाली (अशोकविहार मंदिर में 'शारदा पूजन'– सायं 7:00 से 8:30)**
(10)	**दि.**	**4.11.'13,**	**सोमवार**	—	**अन्नकूटोत्सव, नूतन वर्ष–विक्रम संवत 2070 प्रारंभ** **दिल्ली गुणातीत कुनबे का वार्षिक स्नेहमिलन–सुबह 9:00 से 11:30** **अन्नकूट आरती – दोपहर 12:30 बजे**
(11)	दि.	5.11.'13,	मंगलवार	—	**भैयादूज**
(12)	दि.	7.11.'13,	गुरुवार	—	**लाभपंचमी**
(13)	दि.	13.11.'13,	बुधवार	—	प्रबोधिनी एकादशी–व्रत ***'अक्षरज्योति' में ठाकुरजी के समक्ष सब्जी हाट लगेगी।***
(14)	दि.	14.11.'13,	गुरुवार	—	तुलसी विवाह-प्रारंभ
(15)	दि.	17.11.'13,	रविवार	—	**देवदिवाली**, तुलसी विवाह-समाप्त, श्री गुरुनानक जयंती
(16)	दि.	29.11.'13,	शुक्रवार	—	एकादशी–व्रत
(17)	दि.	13.12.'13,	शुक्रवार	—	एकादशी–व्रत
(18)	दि.	16.12.'13,	सोमवार	—	धनुर्मास प्रारंभ
(19)	दि.	29.12.'13,	रविवार	—	एकादशी–व्रत
(20)	दि.	31.12.'13,	मंगलवार	—	**नए वर्ष के आगमन निमित्त 'ताड़देव' मंदिर में रात्रि 10:00 बजे 'मध्यरात्रि महापूजा'**

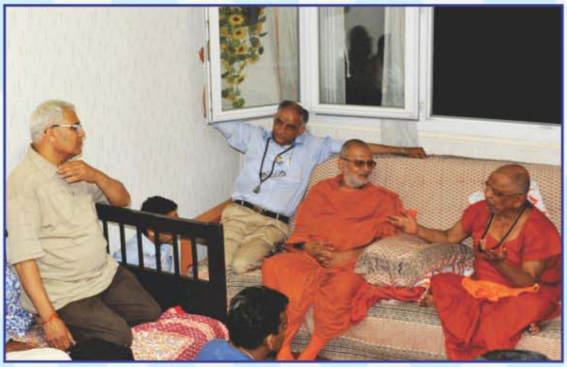

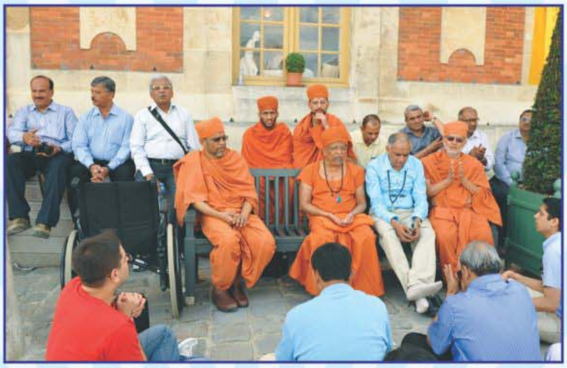

ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी की प्रासादिक भूमि
पेरिस में गुणातीत समाज के संत, युवक, बहनें एवं गृहस्थ

स्वीट्ज़रलैंड में प.पू. गुरुजी के साथ...

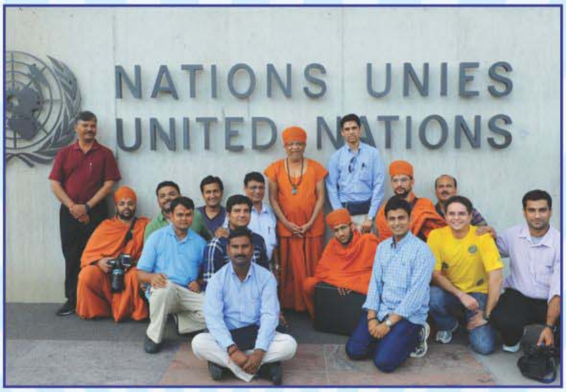

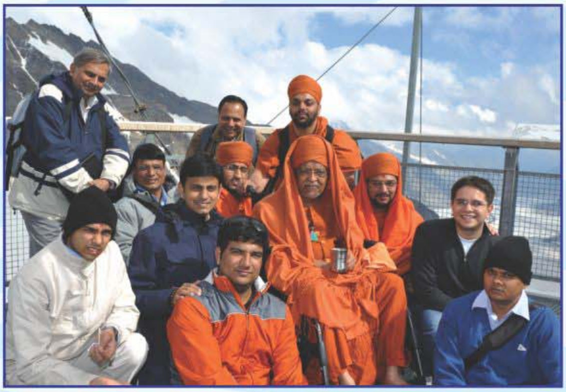

R.N.I. 28971/ 77

Air Mail

'Bhagwatkripa' Bimonthly Magazine – Despatched Bimonthly

If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :-*

SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI

'Taad-dev', Kãkãji Lane, Swãminãrãyan Mãrg, Ashok Vihãr-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327

Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052